RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(मार्च-2025)

‘विमर्श भारत का’ पुस्तक विमोचन कार्यक्रम की झलकियां

भारत भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है -दत्तात्रेय होसबाले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने पंचशील बालक इंटर कॉलेज नोएडा के सभागार में प्रेरणा शोध संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ‘विमर्श भारत का’ पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक का प्रकाशन सुरुचि प्रकाशन ने किया है। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि भारत की राष्ट्रीयता के संबंध में कई विचार आए, जो टूट गया क्या वही भारत है? क्या भारत एक जमीन का टुकड़ा है? या संविधान से चलने वाला केवल एक भारत है? केवल ऐसा नहीं है, भारत एक जीवन दर्शन, आध्यात्मिक प्रतिभूति एवं दुनिया को संदेश देने वाला विश्वगुरु है।

माननीय दत्तात्रेय जी ने कहा कि प्रेरणा संस्थान पिछले कई वर्षों से समाज में वैचारिक और बौद्धिक परिवर्तन लाने का सार्थक प्रयास कर रहा है। विशेष रूप से मीडिया क्षेत्र में प्रेरणा मीडिया संस्थान का सफल हस्तक्षेप है। आज ‘विमर्श भारत का’ पुस्तक का लोकार्पण हुआ है। यह प्रेरणा संस्थान के योगदान से पिछले 4 वर्षों में विमर्श के संदर्भ में चार आयामों को निश्चित करते हुए उसके संदर्भ में संकलित और संक्षेप में चार विमर्शों का संकलित ग्रंथ है। इसमें लोक, राष्ट्र और मानव हित में क्या होना चाहिए और सही क्या है, एक महत्वपूर्ण दिशा है। इस अवसर पर इंडिया टीवी की वरिष्ठ पत्रकार मीनाक्षी जोशी को प्रेरणा सम्मान 2024 प्रदान किया गया।

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

मार्च, 2025
वर्ष : 25 अंक : 03

प्रबंध निदेशक
अणंज कुमार त्यागी

संपादक
कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

धार्मिक, वैज्ञानिक और प्रकृति की सादगी का द्योतक है हिन्दू नव वर्ष-............05

भारत की पुनर्नवा संस्कृति का प्रतीक है भारतीय नव वर्ष -.........................07

ऊर्जा संतुलन : वैज्ञानिक दृष्टि से हिन्दू नववर्ष -.................................09

23 मार्च 1931 बलिदान दिवस –..10

शांति व शक्ति का समन्वय-..12

जल ही जीवन : जल संरक्षण की अनिवार्यता -......................................13

समरसता व रंगों का त्योहार होली-...14

मेरी प्यारी चिड़िया (विश्व गोरैया दिवस 20 मार्च पर विशेष)-......................16

डॉ. हेडगेवार एक आत्म-जागृत व्यक्तित्व थे -.......................................18

पर्यावरण की भारतीय दृष्टि -...20

लोकमाता अहिल्याबाई का कृषि और कौशल विकास मॉडल : एक सतत् प्रगति का दृष्टांत -.. 22

आस्था सब पर भारी -..23

महिला सशक्तीकरण आजादी और जिम्मेदारी का संतुलन -........................24

बांग्लादेश के हिन्दू समाज के साथ एकजुटता से खड़े रहने का आह्वान-....26

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : समाजाभिमुख कार्य–...................................27

कविता : राष्ट्र भक्ति की अमर ज्वाला -...30

नैरेटिव को न्योता देती पुस्तक– 31

गणेश शंकर 'विद्यार्थी' का बलिदान -...33

भारतीय मेधा जिन्होंने विश्व में फहराया परचम -................................34

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय

राष्ट्र पुनित तिथि का प्रतिवर्ष अभिनंदन हो।
नव संवत्सर पर भारत माँ का वंदन हो ॥
नव संवत्सर अर्थात भारत की आत्मा का नव वर्ष
जो कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से प्रारम्भ होता है। ब्रह्मपुराण में वर्णित श्लोक के अनुसार, जगत पिता ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही की थी ...
'चैत्र मासि जगत ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि, शुक्ल पक्षे समग्रेतु तदा सूर्योदय सति।'

यही नव संवत्सर सनातन भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। सनातन भारतीय संस्कृति जो कि एक सुंदर, तार्किक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक सभ्यता है। इस शुभ दिन पर प्रख्यात गणितज्ञ भास्कराचार्य ने सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक दिन, माह और वर्ष की गणना करके प्रथम भारतीय पंचांग बनाया था। भारतीय पंचांग न केवल सांस्कृतिक रूप से बल्कि वैज्ञानिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ग्रहों की परस्पर स्थिति-गति पर आधारित है। लगभग 58 ईसा पूर्व इसी काल गणना के आधार पर चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य ने विक्रमी संवत् की शुरुआत की थी। इसी विक्रमी संवत् को हिन्दू नव वर्ष कहते हैं जो भारत की सांस्कृतिक एकता को प्रदर्शित करता है। इस हिन्दू नववर्ष को महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, दक्षिण भारत में उगादि, मणिपुर में सजीबु चेराओसा, बंगाल में कोयला बैशाख और कश्मीर में नवरेह के नाम से मनाया जाता है। बसंत ऋतु हिन्दू नव वर्ष का प्रतीक है। इस दिन भारत की मिट्टी से उठती सोंधी सुगंध, आकाश के नक्षत्र तारे, संपूर्ण ब्रह्मांड नव संवत्सर की शुभकामनाएं देता प्रतीत होता है। बसंत ऋतु में ऐसा प्रतीत होता है कि नवीन पत्र और पुष्पों से प्रकृति का नव श्रृंगार हो रहा है। यह भारत के गौरवशाली अतीत, हमारे महर्षियों, मनीषियों द्वारा विकसित ज्ञान-विज्ञान की संपन्न और समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करता है। इसलिए प्रत्येक भारतीय को अपनी इस समृद्धशाली विरासत पर गर्व है। यदि हमें अपने स्व का आत्मबोध करना है तो हमें अंग्रेजी नव वर्ष पर नहीं बल्कि विक्रम संवत् पर आधारित नव संवत्सर को मनाना चाहिए। स्व का बोध जगाकर राष्ट्रीय चेतना का जागरण करने वाले ऋषि स्वामी विवेकानंद ने कहा था 'यदि हमें गौरव से जीने की भावना जागृत करनी है, यदि हम अपने हृदय में देशभक्ति के बीज बोना चाहते हैं तो हमें हिन्दू राष्ट्रीय पंचांग का आश्रय लेना होगा।'

विश्वभर में अनेक आधुनिक देश आज भी अपने 'स्व' से अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं। यदि जापान अपने परंपरागत ढंग से, अपनी परंपरागत तिथि पर, अपना नववर्ष मना सकता है; यदि म्यांमार अप्रैल के मध्य अपना नव वर्षोत्सव 'तिजान', ईरान बसंत ऋतु अर्थात् मार्च में अपना नव वर्षोत्सव 'नौरोज', चीन चंद्रमा तिथि के अनुसार जनवरी 21 से फरवरी 21 के बीच अपना पारंपरिक नववर्षोत्सव, असरीयन, थाई और कंबोडियन लोग अप्रैल में अपने-अपने नववर्ष मना सकते हैं- तो फिर हम भारतवासी अपने सांस्कृतिक पंचांग के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को अपना नव वर्षोत्सव क्यों नहीं मना सकते?

आईए इस नव वर्ष पर हम संकल्प लें कि प्रत्येक वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही अपना नव वर्ष मनाएंगे और जीवन के प्रत्येक पक्ष में स्व आधारित मूल्यों को अपनाते हुए भारत के नव निर्माण में अपना सकारात्मक योगदान देंगे।

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. नीलम कुमारी

ISSN No. 2581-3528

धार्मिक, वैज्ञानिक और प्रकृति की सादगी का द्योतक है हिन्दू नव वर्ष

डॉ. दीपा रानी
पोस्ट डॉक्टरल शोधार्थी

भारतीय संस्कृति में मास चन्द्रमा के चक्रों पर आधारित होता है। हिन्दू धर्म में सभी विशेष त्यौहारों को चन्द्र कैलेण्डर का उपयोग करके शुभ तिथियों के अनुसार निर्धारित किया जाता है। आध्यात्मिक और ज्योतिष गणनाओं में हिन्दू कैलेण्डर की महत्वपूर्ण उपयोगिता है। हिन्दू धर्म में हिन्दू कैलेण्डर का उपयोग करके ही विवाह, शुभकार्य, गृह-प्रवेश, अनुष्ठान आदि की तिथि एवं समय को निर्धारित किया जाता है।

हिन्दू नव वर्ष की शुरुआत को चैत्र मास की प्रतिपदा के दिन से मनाया जाता है। ब्रह्मा पुराण में कहा गया है –

चैत्र मासे जगद्ब्रह्म समग्रे प्रथमेऽनि।
शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् इस दिन से ही सृष्टि का प्रारम्भ हुआ और इसी दिन से काल गणना का आरंभ हुआ। प्रतिपदा के दिन से ही हिन्दू पंचांग की शुरुआत होती है। इस दिन हमारे देश के भिन्न–भिन्न राज्यों में अलग–अलग नाम से पर्व–उत्सव मनाये जाते हैं। महाराष्ट्र राज्य में इस दिन को गुड़ी पड़वा, दक्षिण भारत में इसे उगादि, मणिपुर में सजिबू चेराओबा, बंगाल में इसे पोयला वैशाख और कश्मीर में नवरेह के नाम से मनाया जाता है। इस दिन से चैत्र नवरात्रि का आरम्भ होता है। नववर्ष प्राकृतिक पर्व है क्योंकि इस समय पेड़–पौधों में नये फलों और फूलों का सृजन होता है। चारो और हरियाली और वृक्षों में नयी कोपलें उगने लगती हैं। बसंत ऋतु हिन्दू नये वर्ष का प्रतीक है। हिन्दू नववर्ष किसी विशेष संप्रदाय या धर्म का नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति का नववर्ष है। इस समय प्रकृति अपनी छटा फैलाकर सम्पूर्ण सृष्टि को मनोरम एवं सौन्दर्य से ओतप्रोत कर देती है। इस समय फसल तैयार होकर किसानों के घरों में आ जाती है। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से भी देखें तो यह महीना व्यापारी और किसान वर्ग के लिए समापन का समय होता है। प्रकृति इस समय सभी को नयी ऊर्जा से भर देती है। पौराणिक इतिहास में नव वर्ष की महत्ता को सृजन से जोड़कर बताया गया है। कहते है चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन सृष्टि के सृजनकर्ता ब्रह्मा जी ने सूर्योदय के साथ सृष्टि का निर्माण प्रारम्भ

ISSN No. 2581-3528

किया। भारतीय संस्कृति में मास चन्द्रमा के चक्रों पर आधारित होता है। हिन्दू धर्म में सभी विशेष त्यौहारों को चन्द्र कैलेण्डर का उपयोग करके शुभ तिथियों के अनुसार निर्धारित किया जाता है। आध्यात्मिक और ज्योतिष गणनाओं में हिन्दू कैलेण्डर की महत्वपूर्ण उपयोगिता है। हिन्दू धर्म में हिन्दू कैलेण्डर का उपयोग करके ही विवाह, शुभकार्य, गृह–प्रवेश, अनुष्ठान आदि की तिथि एवं समय को निर्धारित किया जाता है। हिन्दू कैलेण्डर में प्रत्येक महीने का एक आध्यात्मिक महत्व है जैसे चैत्र के महीने में नवरात्र तथा हिन्दू धर्म के आराध्य भगवान राम का अवतरण दिवस रामनवमी का त्योहार मनाया जाता है। हिन्दू धर्म में नवरात्र पर्व माँ दुर्गा को समर्पित है जो माँ दुर्गा के विभिन्न रूपों को दर्शाता है। चैत्र नवरात्रि का आरंभ इसी महीने में होता है। चैत्र नवरात्रि का धार्मिक महत्व है– कहते हैं नवरात्रि व्रत– अनुष्ठान को संकल्पपूर्वक पूर्ण करने से माँ दुर्गा अपने भक्तों से शीघ्र प्रसन्न होकर उन्हें बल, ओज, तेज, शक्ति और सामर्थ्य से सम्पन्न करती हैं। नवरात्रि में माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा करने से मनुष्य की सभी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं उसमें उर्जा का नवसंचार होता है। मन में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हो जाता है । शरीर में स्फूर्ति का संचार हो जाता है। कहते है इस काल में नवदिवसीय उपवास से शरीर की अशुद्धियां भी नष्ट हो जाती हैं। व्रत का वैज्ञानिक पहलू यह है कि इस महीने में ऋतु में प्राकृतिक परिवर्तन होने से कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले बालकों, वृद्धों में संक्रमण फैलने का खतरा हो जाता हैं। वैज्ञानिकों का कहना है इस समय के तापमान में बहुत सारे बैक्टीरिया के पनपने और फैलनें की गति अन्य महीनों की तुलना में तीव्र हो जाती है। हमारे पूर्वज, ऋषि और संत यज्ञ अनुष्ठान द्वारा वातावरण की शुद्धि करते थे और व्रत रखकर अपने शरीर को शुद्ध और स्फूर्तिवान रखते थे ताकि जीवाणुओं से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता बढा सकें और कोई भी बैक्टीरिया उन्हें हानि न पहुँचा सके।

काल – खंड को विभाजित करने का काम सबसे पहले हमारे ऋषियों और वैज्ञानिकों ने किया। विक्रमादित्य संवत् को हिन्दू वर्ष के नाम से जाना जाता है। कहते हैं विक्रमादित्य संवत् प्राचीन हिन्दू पंचांग पर आधारित है। 58 ईसा पूर्व चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य ने अपनी राजसभा के विद्वान खगोलशास्त्रियों की सहायता से इसे विकसित किया था। इसे नवसंवत्सर के नाम से भी जाना जाता है। इस कैलेण्डर को 12 महीने और सात दिन के सप्ताह से परिभाषित किया गया है। हिन्दू कैलेण्डर की गणना को सूर्य–चन्द्रमा की गति के अनुसार सूक्ष्मतम् से लेकर विराटतम् सभी पहलुओं को विश्लेषण करके बनाया गया है। इसलिये कह सकते हैं भारतीय पंचांग पूरी तरह से वैज्ञानिक है। भारतीय गणना में इतनी शुद्धता है कि प्रकृति का स्वभाव भारतीय कैलेण्डर के अनुसार ही देखने को मिलता है। कहते हैं जब एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने पंडित मदन मोहन मालवीय जी से पूछा कि कुम्भ में इतना बड़ा भारतीय जनमानस, पूरे वर्ष अदृश्य रहने वाले साधु–संत और नागा संन्यासी अलग–अलग दूर–दराज क्षेत्रों से बिना किसी आमंत्रण के निश्चित समय पर कैसे पहुँच जाते हैं। तब मदन मोहन मालवीय जी ने कहा था कि यह छह आने का पंचांग इसका आधार है जिसमें आज से लेकर 1000 वर्षों तक के कुम्भ का लेखा–जोखा है। ऐसी अद्भुत है भारतीय काल गणना पद्धति।

एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने पंडित मदन मोहन मालवीय जी से पूछा कि कुम्भ में इतना बड़ा भारतीय जनमानस, पूरे वर्ष अदृश्य रहने वाले साधु-संत और नागा संन्यासी अलग-अलग दूर-दराज क्षेत्रों से बिना किसी आमंत्रण के निश्चित समय पर कैसे पहुँच जाते हैं। तब मदन मोहन मालवीय जी ने कहा था कि यह छह आने का पंचांग इसका आधार है जिसमें आज से लेकर 1000 वर्षों तक के कुम्भ का लेखा-जोखा है। ऐसी अद्भुत है भारतीय काल गणना पद्धति।

स्वामी विवेकानन्द जी का भी कहना था कि यदि हम गर्व से जीना चाहते हैं और सभी देशवासियों में देश भक्ति का संचार करना चाहते हैं तो हमें अपनी महत्वपूर्ण तिथियों और हिन्दू कैलेण्डर को अपनाना होगा। दुनिया के लगभग कई देशों ने भारतीय पंचांग व भारतीय काल गणना प्रणाली को आधार मानकर ही अपने कैलेण्डर का निर्माण किया।

चैत्र मास की तिथि एक कल्पादि तिथि है इसका वैदिक नाम मधुमास है यह वास्तव में आनंद का मास है। इस मास में मौसम में ऊष्णता की शुरुआत हो जाती है। मन और शरीर प्रफुल्लित हो उठता है। इस तिथि से सतयुग का प्रारंभ भी माना जाता है। यह आध्यात्मिक, धार्मिक ज्योतिष और वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। हमें इस मास में धार्मिक अनुष्ठान, जप पूजापाठ एवं शुभ कार्यो के साथ प्रकृति की नयी ऊर्जा का स्वागत करना चाहिए। ऐसे आयोजनों पर अपने घर–परिवार, आस–पड़ोस और संस्थानों में शुभ कार्यक्रमों का आयोजन कर अपनी महान सांस्कृतिक निधि को आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करना चाहिए। ■

ISSN No. 2581-3528

भारत की पुनर्नवा संस्कृति का प्रतीक है भारतीय नव वर्ष

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर – अंग्रेजी विभाग
झम्मन लाल पी.जी. कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा

हिन्दू नववर्ष की तिथि और यूरोपीय न्यू ईयर की तिथि में बहुत अंतर है। ग्रेगोरियन कैलेण्डर में जनवरी माह में वर्ष 2025 की शुरुआत हो चुकी है जबकि हिन्दू पंचांग के अनुसार, ये ईसवी सन 2081 है। अंग्रेजी कैलेण्डर की 30 मार्च तिथि को जो हिन्दू नववर्ष शुरू होगा वो हिन्दू काल गणना पद्धति से विक्रमी संवत 2082 वें वर्ष का प्रारंभ होगा।

चैत्र प्रतिपदा, यानी गुड़ी पड़वा अपना नवीनता का पर्व है। हम यह मानते हैं कि दुनिया इसी दिन बनी थी, यह हमारा नव वर्ष है, लेकिन अपना यह नव वर्ष रात के अंधेरे में नहीं आता, हम नववर्ष पर जीवन का संचार करने वाले सूर्य नारायण की पहली किरण का स्वागत करते हैं, घर में सांस्कृतिक गतिविधियां और पूजा-पाठ होता है। जबकि पश्चिमी जगत में अंधेरे में नए साल की अगवानी होती है, हमारे कुछ युवा भी यूरोपीय शैली का अन्धानुकरण करते हुए रात को 12 बजे शराब और हल्ले गुल्ले के साथ पार्टी करते हैं। किन्तु प्रसन्नता का विषय यह है कि भारत के इस नवजागरण काल में भारतीय युवाओं ने अपनी जड़ों की ओर लौटना प्रारम्भ कर दिया है। भारतीय नववर्ष का तारीख से उतना संबंध नहीं है, जितना मौसम से है। उसका आना सिर्फ कैलेण्डर से पता नहीं चलता। प्रकृति झकझोर कर हमें चारों ओर फूट रही नवीनता का अनुभव कराती है। पुराने पीले पत्ते पेड़ से गिरते हैं उनमें नई कोंपलें फूटती हैं। प्रकृति अपने शृंगार की प्रक्रिया में होती है। लाल, पीले, नीले, गुलाबी फूल खिलते हैं। ऐसा लगता है कि पूरी सृष्टि नई हो गई है।

प्रकृति का चक्र अंग्रेजी कैलेण्डर के जनवरी माह में समाप्त नहीं होता है, यह भारतीय चैत्र मास में होता है जिसे सरलता से इन दिनों अनुभव किया जा सकता है। चैत्र नववर्ष अर्थात् हिन्दू नववर्ष प्रकृति में जीवन के नए शुभारम्भ का प्रतीक है। चारों ओर अवलोकन करने से ही अनुभव में आता है कि पतझड़ के बाद प्रकृति का नया शृंगार हो गया है। वन उपवन में कोपल पत्तियां, फूल और मंजर मानव मन को हर्षित कर रहे हैं। अनपढ़ और गांव के सरल सादे व्यक्ति को भी इसका भान होता है कि यह चैत्र मास है। दुर्भाग्य है कि गांव में रहने वाली पीढ़ी बिना किसी विद्यालय गये ऋतुओं और मास को केवल प्रकृति के अवलोकन से पहचान लेती थी और कृषि व्यवस्था भी इसी पर आधारित थी, मैकाले ने हमारी व्यवस्था ऐसी बिगाड़ी कि आज हमारी पढ़ी-लिखी पीढ़ी भी इस परम्परागत विज्ञान से अनभिज्ञ है जिस स्थिति को हमें बदलना होगा। इस माह में पेड़ों के पुराने पत्ते झड़ जाते हैं। नये पत्ते आ जाते हैं। इसलिए इस माह को प्रकृति का नववर्ष भी कहा जाता है। अपनी संस्कृति की छह ऋतुओं में इसे ही वसंत ऋतु कहा जाता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।

ISSN No. 2581-3528

चैत्र मास में ही हिन्दू नववर्ष मनाया जाता है। इस बार नवरात्रि का आरंभ और समापन दोनों रविवार को हो रहा है, जिससे माँ दुर्गा हाथी पर सवार होकर आएंगी और इसी पर प्रस्थान करेंगी। हाथी पर माता का आगमन अत्यंत शुभ माना जाता है, जो अच्छे वर्षा चक्र, समृद्धि और खुशहाली का संकेत देता है। मान्यता है कि देवी की सवारी से आने वाले समय की स्थिति का अनुमान लगाया जाता है, जिसमें प्रकृति, कृषि और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव शामिल होते हैं।

हिन्दू नववर्ष की तिथि और यूरोपीय न्यू ईयर की तिथि में बहुत अंतर है। ग्रेगोरियन कैलेण्डर में जनवरी माह में वर्ष 2025 की शुरुआत हो चुकी है जबकि हिन्दू पंचांग के अनुसार, ये ईसवी सन 2081 है। अंग्रेजी कैलेण्डर की 30 मार्च तिथि को जो हिन्दू नववर्ष शुरू होगा वो हिन्दू काल गणना पद्धति से विक्रमी संवत् 2082 वें वर्ष का प्रारंभ होगा। यानी हिन्दू कैलेण्डर ग्रेगोरियन कैलेण्डर से 57 वर्ष आगे है। यह अंतर दर्शाता है कि ईसा मसीह के जन्म के 57 वर्ष पूर्व उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य द्वारा शक और हूणों को पराजित किये जाने के उपलक्ष में उनके राज्य के खगोलविदों द्वारा विक्रमी संवत की स्थापना की गई थी, अर्थात् ईसा मसीह के जन्म के 57 वर्ष पूर्व भी भारत में चक्रवर्ती सम्राटों की परम्परा चलती आ रही थी, ऐसी उन्नत अपनी सभ्यता थी।

भारत के पूर्वोत्तर में बंग प्रदेश भी पोइला बोइशाख उत्सव को मनाता है। उत्तर में पंजाब क्षेत्र में हर वर्ष 13 अप्रैल को बैसाखी पर्व मनाई जाती है, यह पर्व फसल कटाई की खुशी में मनाया जाता है। लोग सामूहिक रूप से भांगड़ा और गिद्दा करते हैं। चैत्र नवरात्र पूजन होता है। वहीं हमारे वनवासी बन्धु प्रकृति पर्व 'सरहुल' भी इस माह में मनाते हैं। राजस्थान में गौरी पूजन से जुड़ा लोकप्रिय पर्व गणगौर भी इसी मास में मनाया जाता है। भारत के मध्य और दक्षिणी क्षेत्र में भी विभिन्न नामों से पर्व–उत्सव मनाये जाते हैं।

इस मास की अपनी ही विशेषता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाला जन–समुदाय अपने–अपने विधि–विधान से पर्व–त्योहार मनाकर सांस्कृतिक नव वर्ष में प्रवेश करता है। इसलिए यह मास उत्सव–पर्व–त्योहारों का माह भी है जिसमें पूरा देश हर्ष–उल्लास में आनंदमग्न रहता है, प्रेम, हर्ष, उत्सव, आनंद और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण 'एकात्म भाव' ही भारत का स्वभाव है। चैत्र नवरात्र में शक्ति के विभिन्न रूपों की साधना–उपासना करते हुए हिन्दू समाज सभी नकारात्मकता को समाप्त कर नई ऊर्जा और शक्ति के साथ नए वर्ष में नई ताजगी के साथ प्रवेश करता है। भले ही लोग चैत्र माह में अपने पर्व अलग–अलग रूप से मनाते हैं, लेकिन सबका मूल यही है कि ये पर्व प्रकृति से जुड़े हैं, सनातन नियम से जुड़े हैं जो माता प्रकृति में प्रगट होता है। यही परम नियम वेदों में 'ऋत' नाम से अभिहित है। यही सम्पूर्ण विश्व को संचालित करता है और हमारे जीवन का प्राण है।

यह मास उत्सव-पर्व-त्योहारों का माह भी है जिसमें पूरा देश हर्ष-उल्लास में आनंदमग्न रहता है। प्रेम, हर्ष, उत्सव, आनंद और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण 'एकात्म भाव' ही भारत का स्वभाव है।

गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी ने अपने एक उद्बोधन में स्मरण कराया था कि नव संवत्सर का पहला दिन ब्रह्मा जी द्वारा सृष्टि का प्रथम दिन है। भगवान राम और युधिष्ठिर का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ था। विक्रम संवत की शुरुआत इसी दिन हुई थी। इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी का जन्म भी हुआ था। सिंधी समाज के आराध्य देव भगवान झूलेलाल जी का अवतरण भी चैत्र मास की द्वितीया तिथि है। महर्षि दयानंद जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना इसी दिन हुई थी। हमारी संस्कृति में यह दिवस और यह मास अनेक पुण्य व शुभ कार्यों की शुरुआत का अवसर है। यह भारत की नई पीढ़ी को उनकी जड़ों से जोड़ने और नई ऊर्जा के साथ अपना उत्थान करते हुए देश–समाज और सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करने की दिशा में प्रेरित करता है। हम सभी का यह दायित्व बनता है कि हम सभी अपनी संस्कृति के ऐसे अवसरों का भरपूर प्रयोग अपने बच्चों को अपनी महान संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कराने हेतु करें। अपने घरों, गली–मोहल्लों, मंदिरों, विद्यालयों, सोसाइटीज और दुकानों–व्यावसायिक संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। अंग्रेजों द्वारा हम पर थोपी गयी अंग्रेजी जीवन पद्धति को अपनाकार हम अपनी अस्मिता भूल बैठे, उनकी वैचारिक और मानसिक गुलामी से अभी तक आजाद नहीं हो पाए हैं। यह पर्व हमें अवसर उपलब्ध कराते हैं कि हम स्वयं अपनी मानसिक बेड़ियों को काट फेंके और अपने बच्चों को भारत की मूल संस्कृति का परिचय कराएं, उन्हें भारत का बोध कराएं। आइये हिन्दू नव वर्ष पर संकल्प लें कि अपने घर– परिवार–कुटुंब में हिन्दू संस्कृति को पुनर्स्थापित करेंगे, भारत के तत्व को अपने जीवन में धारण कर उसे अपनी नई पीढ़ी में पोषित करेंगे उसका संरक्षण और संवर्धन करेंगे। हिन्दू नव वर्ष की शुभकामनाएं। ■

ISSN No. 2581-3528

ऊर्जा संतुलन : वैज्ञानिक दृष्टि से हिन्दू नववर्ष

मानस वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

देवी मां दुर्गा, मां लक्ष्मी और मां सरस्वती जैसी देवियाँ नारी शक्ति, धन और ज्ञान की प्रतीक हैं।भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का स्वरूप माना गया है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को उनके अधिकार, शिक्षा और समानता प्रदान करना है। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि समाज के विकास का महत्वपूर्ण आधार है।

नवरात्रि और हिंदू नववर्ष भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण पर्व हैं, जो नारी शक्ति, सम्मान और महत्व को विशेष रूप से रेखांकित करते हैं। इन पर्वों के माध्यम से समाज में महिलाओं की भूमिका और उनकी प्रतिष्ठा को उजागर किया जाता है।

नवरात्रि, हिंदू धर्म में देवी दुर्गा के नौ रूपों की आराधना का पर्व है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। वसंत ऋतु में 'चैत्र नवरात्रि' और शरद ऋतु में 'शारदीय नवरात्रि'। हिंदू पंचांग के अनुसार, चैत्र मास की प्रतिपदा को नववर्ष का आरंभ माना जाता है, जिसे 'गुड़ी पड़वा' या 'उगादी' के नाम से भी जाना जाता है। यह समय वसंत ऋतु का होता है, जो नई ऊर्जा और सृजन का प्रतीक है। चैत्र नवरात्रि के दौरान देवी दुर्गा की पूजा करके लोग नए वर्ष की शुभ शुरुआत करते हैं, जिससे यह पर्व नववर्ष और नवरात्रि के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करता है। नवरात्रि का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा है, जहाँ इसे बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। देवी दुर्गा ने महिषासुर नामक असुर का वध करके धर्म की स्थापना की थी, जिसे इस पर्व के माध्यम से स्मरण किया जाता है।

महिलाओं का सम्मान और उनकी भूमिका समाज की प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक शिक्षित और सशक्त महिला अपने परिवार और समाज को समृद्धि की ओर ले जाती है। महिलाएँ समाज की आधारशिला हैं, और उनका सम्मान समाज की समृद्धि का प्रतिबिंब है।

नवरात्रि के दौरान प्रतिदिन एक देवी की पूजा की जाती है, जो इस प्रकार हैं।

1. **शैलपुत्री** : पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा होती है, जो पर्वतराज हिमालय की पुत्री हैं। यह स्वरूप स्थिरता और धैर्य का प्रतीक है।

2.**ब्रह्मचारिणी**: दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की पूजा की जाती है, जो तपस्या और संयम का प्रतीक हैं।

3. **चंद्रघंटा** : तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा होती है, जो साहस और वीरता का प्रतीक हैं। इनके मस्तक पर अर्धचंद्र सुशोभित है।

4. **कूष्माण्डा** : चौथे दिन मां कूष्माण्डा की पूजा की जाती है, जो सृष्टि की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं।

5.**स्कंदमाता**: पांचवें दिन मां स्कंदमाता की पूजा होती है, जो भगवान कार्तिकेय की माता हैं और ममता का प्रतीक हैं।

6. **कात्यायनी**: छठे दिन मां कात्यायनी की पूजा की जाती है, जो शक्ति और साहस की देवी हैं।

7. **कालरात्रि** : सातवें दिन मां कालरात्रि की पूजा होती है, जो नकारात्मक शक्तियों का नाश करने वाली हैं।

8. **महागौरी**: आठवें दिन मां महागौरी की पूजा की जाती है, जो शांति और पवित्रता का प्रतीक हैं।

9. **सिद्धिदात्री**: नौवें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा होती है, जो सभी सिद्धियों की दात्री मानी जाती हैं।

भारत की सांस्कृतिक विविधता के कारण नवरात्रि का उत्सव विभिन्न राज्यों में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है–

गुजरात : यहाँ नवरात्रि का पर्व विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है। लोग पारंपरिक परिधानों में गरबा और डांडिया रास नृत्य करते हैं।

पश्चिम बंगाल, झारखंड और असम : इन राज्यों में दुर्गा पूजा के दौरान भव्य पंडालों का निर्माण होता है, जहाँ देवी दुर्गा की मूर्तियाँ स्थापित की जाती हैं। महिलाएँ ढाक की थाप पर नृत्य करती हैं और देवी को प्रसन्न करने का प्रयास करती हैं।

दिल्ली : राजधानी दिल्ली में नवरात्रि और दुर्गा पूजा दोनों का संयुक्त उत्सव मनाया जाता है। रामलीला का आयोजन भी विशेष आकर्षण होता है।

महाराष्ट्र : यहाँ लोग नवरात्रि को नई शुरुआत के रूप में मनाते हैं और नए वस्त्र एवं आभूषण खरीदते हैं। गरबा और डांडिया नाइट्स भी लोकप्रिय हैं।

हिमाचल प्रदेश: यहाँ नवरात्रि के दसवें दिन को 'कुल्लू दशहरा' के रूप में मनाया जाता है, जहाँ भगवान राम की अयोध्या वापसी का प्रतीकात्मक जुलूस निकाला जाता है।

आंध्र प्रदेश : यहाँ नवरात्रि को श्बथुकम्मा पांडुगाश के रूप में मनाया जाता है, जिसमें महिलाएँ फूलों से सजे बथुकम्मा के चारों ओर नृत्य करती हैं और देवी गौरी की पूजा करती हैं।

निष्कर्ष : शक्ति उपासना का पर्व हिंदू नव वर्ष और नवरात्रि भारतीय संस्कृति और परंपरा का अभिन्न हिस्सा हैं। यह पर्व न केवल आध्यात्मिक उन्नति का अवसर प्रदान करता है, बल्कि नारी शक्ति और सम्मान को भी बढ़ावा देता है। नवरात्रि के दौरान देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा हमें यह सिखाती है कि जीवन में शक्ति, भक्ति और आत्मशुद्धि का कितना महत्व है। ■

23 मार्च 1931 बलिदान दिवस

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

देश की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले अमर बलिदानी सरदार भगत सिंह सुखदेव और राजगुरु का संबंध दिल्ली एनसीआर के नोएडा से भी है। आज जहां नोएडा बसा हुआ है वहीं सेक्टर 145 में एक गांव है जिसका नाम है नालागढ़ जहाँ क्रांतिकारियों के मित्र विजय सिंह पथिक रहते थे। दिल्ली के पास में निर्जन और एकांत स्थान नालागढ़ के जंगलों में यह क्रांतिकारी बम बनाते और उसका परीक्षण करते थे।

इतिहास में अनेक तिथियां मील का पत्थर बन जाती हैं ऐसी ही एक तिथि है 23 मार्च यह तिथि हमें उन तीन नवयुवकों के बलिदान का स्मरण कराती है जिन्होंने माँ भारती के लिए अपने यौवन की तिलांजलि देकर बलिदानों के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराया। जिस आयु में आज के युवा दो दिलों के प्रेम में खोते दिखाई देते हैं या फिर अपने उज्जवल भविष्य को साकार करने के लिए यत्नशील होते हैं उस 23-24 वर्ष की आयु में अपने सभी स्वप्नों को माँ भारती के चरणों में समर्पित कर देने वाले तीन वीरों से प्रेरणा लेने की तिथि है 23 मार्च।

23 मार्च 1931 को लाहौर की सेंट्रल जेल में तीन युवाओं ने हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमा था, यह तीन युवा क्रांतिकारी थे सरदार भगत सिंह, सुखदेव और शिवराम हरि राजगुरु।

23 मार्च 1931 के बाद भारतीय स्वाधीनता संग्राम का एक नया युग प्रारम्भ हो गया था। ब्रिटिश तंत्र को यह अनुमान भी नहीं था कि इन तीनों क्रांतिकारियों की फांसी भारत में हजारों क्रान्तिकारी पैदा कर देगी।

तीनों क्रांतिकारियों में भगत सिंह की चर्चा अधिक होती है क्योंकि वे मात्र एक क्रांतिकारी ही नहीं अपितु एक वैचारिक योद्धा भी थे, उनकी लेखनी समय से बहुत आगे जाकर नए भारत और नयी सामाजिक व्यवस्था का तीखा विश्लेषण करती थी। किन्तु यहां उल्लेख करना समीचीन होगा कि राजगुरु और सुखदेव भी असाधारण क्रांतिकारी थे।

राजगुरु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक भी थे और संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार के सीधे संपर्क में थे। 1926-27 में नागपुर की भोंसले वेधशाला में पढ़ते समय वह स्वयंसेवक बने थे। क्रांतिकारियों द्वारा 1928 में लाहौर में पुलिस अधिकारी का वध करने के बाद डॉ. हेडगेवार ने उन्हें उमरेड में भैया जी दाणी के फार्म हाउस में छिपने की व्यवस्था की थी। वह विद्वानों के कुल से थे, उन्होंने काशी में रहकर हिन्दू धर्म शास्त्रों का गहन अध्ययन किया था। 'राजगुरु' इनके विद्वान पूर्वज को संस्कृत परम्परा के उत्कट विद्वान के रूप में मिली उपाधि थी उपनाम नहीं। उनके साथी क्रांतिकारी उन्हें गनमैन कहते थे, क्योंकि वे एक ही शॉट में लक्ष्य को भेद देते थे।

सुखदेव भी एक ऐसे युवा क्रांतिकारी थे जो हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के महत्वपूर्ण सदस्यों में से एक थे। लायलपुर से हाई स्कूल करने के बाद वह लाहौर नेशनल कॉलेज में पढने आये थे, जो उस समय क्रांतिकारियों का गढ़ था और उसके प्रबंधक क्रांतिकारी भाई परमानंद थे। यहीं वह भगत सिंह और सुखदेव के मित्र बनें। 1926 में लाहौर में 'नौजवान भारत सभा' का गठन हुआ जिसके मुख्य संयोजक सुखदेव ही थे। सुखदेव गांधी जी को छद्म नाम इसे पत्र लिखते थे, गांधीजी भी उनके पत्र का उत्तर देते थे। अपने एक पत्र में सुखदेव ने गांधी जी को "परम पूज्य महात्मा जी", कहकर संबोधित किया था जो यह स्पष्ट करता था कि गांधी जी की कार्यपद्धति से प्रसन्न नहीं होने के बावजूद उनके मन में गांधी जी के लिए पूरा आदर और सम्मान था। इस पत्र के माध्यम से उन्होंने गांधी जी द्वारा स्वतंत्रता के लिए अपनाए गए

तरीके से अपनी असहमति व्यक्त की थीं। सुखदेव के इस पत्र ने देश में स्वतंत्रता सेनानियों के दो प्रमुख दलों के बीच वैचारिक मतभेदों को उजागर किया था। गांधी जी हिंसा के आरोप में पकड़े गए राजनीतिक कैदियों को रिहा करने के लिए सरकार से बातचीत कर रहे थे। दूसरी ओर, वे क्रांतिकारियों से अपनी गतिविधियाँ बंद करने की अपील भी कर रहे थे। गांधी जी का मानना था कि हिंसा का रास्ता अपनाकर स्वतंत्रता हासिल नहीं की जा सकती। फांसी दिए जाने के बाद सुखदेव का गांधी जी को लिखा पत्र यंग इंडिया में प्रकाशित हुआ था। सुखदेव द्वारा 'भारत का नागरिक' नाम से लिखा गया यह पत्र आज इन्टरनेट पर खोजने पर मिल जाएगा, जिसे पढ़कर हम सुखदेव के वैचारिक दृष्टिकोण एवं तत्कालीन गर्म दल और नरम दल के बीच की तल्खियों को लेकर उनके विश्लेषणात्मक अध्ययन को समझ सकते हैं।

सरदार भगत सिंह तीनों क्रांतिकारियों में विरले थे, उनकी पैनी दृष्टि और वैचारिक परिपक्वता से सभी साथी क्रांतिकारी प्रभावित थे। पिता के द्वारा विवाह तय कर दिए जाने पर उन्होंने पिता के नाम एक पत्र लिखकर घर त्याग दिया था। पत्र में लिखा था :–

पूज्य पिता जी, नमस्ते,

मेरी जिन्दगी मक्सदे आला यानी आजादी–ए–हिन्द के असूल के लिए वक्फ हो चुकी है। इसलिए मेरी जिन्दगी में आराम और दुनियावी खवाहिशात वायसे कशिश नहीं हैं ।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापूजी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते वक्त के लिए वक्फ कर दिया गया है। लिहाजा मैं उस वक्त की गई प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूं। उम्मीद है आप मुझे माफ फरमाएंगे।

आपका तावेदार –भगत सिंह

निश्चित रूप से एक युवक द्वारा अपने विवाह से पूर्व अपने जीवन को राष्ट्र हित समर्पित कर देने वाला ऐसा उदहारण दुनिया में विरला है।

बहुत कम लोग इस बात को जानते होंगे कि देश की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले तीनों क्रांतिकारियों का संबंध नोएडा से भी है। आज जहां नोएडा बसा हुआ है वहीं सेक्टर 145 में एक गांव है जिसका नाम है नालागढ़ जहां क्रांतिकारियों के मित्र विजय सिंह पथिक रहते थे। दिल्ली के पास में निर्जन और एकांत स्थान नालागढ़ के जंगलों में यह क्रांतिकारी बम बनाते और उसका परीक्षण करते थे।

भगत सिंह का पूरा परिवार सनातनी और आर्य समाज से जुड़ा था। किन्तु बड़ी चालाकी से उनके विरुद्ध सुनियोजित वामपंथी विमर्श खड़ा किया गया उन्हें नास्तिक और वामपंथी सिद्ध करने की कोशिशे हुईं।

भगत सिंह और क्रान्तिवीर सावरकर के बीच भावनात्मक सम्बन्ध था। प्रसिद्ध मराठी इतिहासकार य. दि. फड़के के अनुसार, भगत सिंह ने 1857 के स्वातंत्र्य समर पर लिखी गई सावरकर की प्रतिबंधित पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कर क्रांतिकारियों में इसका प्रचार किया था। सावरकर की एक और पुस्तक 'हिंदू पदपादशाही' से भी भगत सिंह ने प्रेरणा ली थीं। उनकी जेल डायरी में इसके उद्धरण मिलते हैं। जिस दिन इन तीनों को फांसी हुई थी उस दिन वीर सावरकर ने अपने घर पर काला झंडा लगाया था। भगत सिंह का पूरा परिवार सनातनी और आर्य समाज से जुड़ा था। किन्तु बड़ी चालाकी से उनके विरुद्ध सुनियोजित वामपंथी विमर्श खड़ा किया गया। उन्हें नास्तिक और वामपंथी सिद्ध करने की कोशिशे हुई। कहते हैं फांसी लगने से पूर्व वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे, संभवतः उसका एक कारण यही था कि भगत सिंह स्वाध्यायशील थे और उस काल में रुसी क्रांति के बाद साम्यवाद विकसित हो रहा था, लेनिन का क्या विचार है उसे प्रत्येक जिज्ञासु जानना चाहता था और भगत सिंह भी ऐसे ही जिज्ञासुओं में से एक थे क्योंकि वे स्वभाव से क्रांतिकारी थे और उस समय लेनिन भी एक क्रांतिकारी के रूप में प्रसिद्ध थे। वामपंथियों ने उनके लेनिन की जीवनी पढ़ने को प्रचारित कर उन्हें मार्क्सवादी सिद्ध करने का षड्यंत्र किया, ईश्वर और समाजवाद को लेकर भगत सिंह के विचारों को मार्क्सवाद से प्रेरित बताया लेकिन यही वामपंथी यह नहीं बताते कि भगत सिंह जेल में वीर सावरकर की पुस्तकें '1857 का स्वातंत्र्य समर' और 'हिन्दू पदपादशाही' भी पढ़ रहे थे। लाला लाजपत राय और रविन्द्रनाथ ठाकुर सहित अन्य महापुरुषों की पुस्तकें भी पढ़ रहे थे। इन वामपंथियों द्वारा भगत सिंह के नास्तिक होने की बात को ऐसे प्रचारित किया जाता है, जैसे वे हिन्दू धर्म से घृणा करते हों। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं था, यह तत्कालीन परिस्थितियों में उनके खोजी चिंतन से निकला एक विचार था। भगत सिंह का मूल व्यक्तित्व भारत के दर्शन से प्रेरित था। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के मैनिफेस्टो में ही लिखा हुआ था कि इसके सदस्य भारत के समृद्ध इतिहास के महान ऋषियों का अनुसरण करेंगे। हिंदुत्व को लेकर उनके राजनीतिक गुरु लाला लाजपत राय की अगाध श्रद्धा थी। लाला लाजपत राय वेदों को हिन्दू धर्म की रीढ़ मानते थे। यदि भगत सिंह नास्तिक होते तो धर्मपरायण और सनातनी महापुरुषों महर्षि दयानंद, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और वीर सावरकर को अपना आदर्श कभी नहीं मानते। जनेऊ शिखा व धोतीधारी महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद भी धर्मनिष्ठ क्रांतिकारी थे और उनके साथ भगत सिंह का घनिष्ठ सम्बन्ध किसी से छिपा नहीं है। एक नास्तिक का एक आस्तिक के साथ ऐसा प्रगाढ़ सम्बन्ध हो सकता है क्या? भारत बोध को लेकर दिग्भ्रमित की गयीं पीढ़ी तक ऐसे तथ्यों को पहुंचाना हम सबका साझा उत्तरदायित्व है।

23 मार्च की तिथि केवल इन तीनों क्रांतिकारियों के चित्रों पर माल्यार्पण कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेना मात्र नहीं है अपितु अपनी आने वाली पीढ़ियों में इनके जैसा चरित्र निर्माण करने की हमारी प्रतिज्ञा के बारम्बार स्मरण का दिन है। जब भारत का प्रत्येक युवा अपने राष्ट्र के प्रति ऐसी ही निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और वैचारिक भारत–बोध से युक्त होगा तब ही ऐसे अनगिनत बलिदानियों की आत्मा तृप्त होगी। ■

ISSN No. 2581-3528

शांति व शक्ति का समन्वय

अशिता
बी.टेक-कंप्यूटर साइंस

जय माँ! सनातन धर्म में कथाओं का विशेष महत्व है। पूर्व काल में घटित देवी–देवताओं की पौराणिक कथाएँ – श्रुति व स्मृति और शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य के द्वारा अगली पीढ़ियों को बतलाई जाती रहीं हैं। ऐसी ही एक दिव्य कथा – मार्कन्डेय पुराण में वर्णित श्री दुर्गा सप्तशती (देवी महात्मय) में माँ दुर्गा के महिषासुरमर्दिनी स्वरूप का सुंदर उल्लेख है।

चैत्र के इस मंगल माह में नवरात्रि का महापर्व भारतवर्ष में श्रद्धा व अतिउत्साह के साथ मनाया जाता है। माँ दुर्गा की कथा के अनुसार, महिषासुर नामक राक्षस और उसकी सेना के राक्षसों से नौ दिवस तक माँ ने युद्ध करके दसवे दिन उसे पराजित किया। यह सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर और शक्ति की दुराचार पर विजय का प्रतीक है। देवी को नौ रात्रि भक्तिभाव से पूजा जाता है, और प्रत्येक दिन उनकी एक विशेष शक्ति की आराधना की जाती है।

वैदिक काल से प्रारंभ हुआ यह शुभ पर्व सहस्त्रों वर्षों से भारतीय संस्कृति और समाज का महत्वपूर्ण भाग रहा है। भक्तगण देवी माँ की कृपा को प्राप्त होने व अपने जीवन को शुद्ध करने हेतु समर्पण से व्रत उपवास करते हैं। माता के कीर्तन का सुमधुर गान होता है। कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। भक्त इस समय देवी दुर्गा की महिमा और उनकी महिषासुर पर विजय की कथाएँ प्रस्तुत करते हैं।

मंदिरों व धार्मिक अनुष्ठानों से जन्मी भारत की शास्त्रीय नृत्य कला कथक में देवी–देवताओं की कथाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। लोक कथाओं व परंपराओं से प्रचलित एक पंक्ति कही जाती है– 'कथा कहे सो कथक कहलावे।' आध्यात्म और संस्कृति में जिसकी जड़ें सुदृढ़ हैं, ऐसी कला की शैली कथक द्वारा वर्षों से सनातन धर्म की दिव्य कथाओं को विभिन्न मुद्राओं द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। गणेश जी, देवी, शिव जी, श्री राधा कृष्ण, रामायण व अनेकों और अलौकिक कथाओं की नृत्य के पवित्र माध्यम से प्रस्तुति की जाती है। कथक साधक इसे अपनी आराधना मानते हैं व अपनी प्रस्तुति भगवान को समर्पित करते हैं।

कथक नृत्यशैली में देवी का महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसी मान्यता है कि नृत्य में तांडव भगवान शिव द्वारा प्रकट हुआ और लास्य नृत्य की उत्पत्ति माता पार्वती द्वारा हुई। उमा–शंकर जी की अर्धनारेश्वर स्वरूप हैं, दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं – अर्थात एक हैं। दोनों ही रूपों में दया व पराक्रम, शांति व शक्ति का समत्व हैं। तांडव नृत्य पक्ष जिधर तीव्र, ऊर्जावान, आक्रामक, और शक्ति का प्रतीक है। वहीं लास्य नृत्य कोमलता, सुंदरता, प्रेम व शांति का प्रतीक है।

नवरात्रि और कथक का एक सुंदर संबंध है। कथक में देवी दुर्गा की आराधना करते समय मंत्रों, स्तुतियों और भक्ति गीतों के साथ नृत्य किया जाता है, जो पूरे प्रदर्शन को आध्यात्मिक बना देता है। देवी स्तुति, सरस्वती वंदना, काली तांडव व पखावज के तीव्र और प्रभावशाली बोलों पर दुर्गा परण द्वारा माँ की असीम शक्ति को साधक भक्तिभाव से अभिव्यक्त करता है। देवी की वीरता व करुणा को कथक की घूम (चक्कर), तिहाई ऐवं भाव भंगिमा से प्रकट किया जाता है। माँ जगदंबा की ऊर्जा व दिव्यता को कथक साधक श्रद्धा, भक्ति और नृत्य कौशल से चित्रित करते है। इन प्रस्तुतियों में माँ के अनेक स्वरूपों के अनुसार गुणों को उजागर करते हैं – जैसे माँ सरस्वती की आराधना और ज्ञान को समर्पण दर्शाया जाता है, वैसे ही काली माँ के ऊग्र स्वरूप को कथक नृत्य के माध्यम से जीवंत किया जाता है।

नवरात्रि की धार्मिक व सांस्कृतिक महत्ता और कथक नृत्य साधना के माध्यम से श्रद्धा और उल्लास से यह शुभ पर्व और भी सुशोभित हो जाता है। माँ के ध्यान को साधने से यह ज्ञात होता है कि सत्य स्वरूप यह आत्मा अपार शांति व शक्ति का समन्वय ही है। ■

ISSN No. 2581-3528

जल ही जीवन : जल संरक्षण की अनिवार्यता

मिली संगल
प्राचार्या, महर्षि दयानंद विद्यापीठ
पब्लिक स्कूल गोविंदपुरम, गाजियाबाद

'बिन पानी सब सून'– संत रहीम का यह दोहा आज के दौर में और भी प्रासंगिक हो गया है। जल ही जीवन है, परंतु हम इसे बचाने के प्रति कितने जागरूक हैं? धरती पर उपलब्ध मीठे पानी का प्रतिशत बहुत कम है, फिर भी हम इसे व्यर्थ गंवा रहे हैं। आज स्थिति यह है कि पानी की कीमत बढ़ती जा रही है और हमें इसे खरीदना पड़ रहा है। एयरपोर्ट या अन्य स्थानों पर पानी की बोतल की कीमत तकरीबन 150 रुपये तक होती है, जबकि कुछ लोग इसे व्यर्थ में बहाते हैं। यह विरोधाभास बताता है कि जल संरक्षण कितना आवश्यक है।

पानी की कीमत : क्या हमने इसे समझा? आज पानी केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं रहा, बल्कि यह एक महंगी वस्तु बन चुका है। शहरों में पानी के टैंकर खरीदने पड़ते हैं, बोतलबंद पानी अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग कीमत में मिलता है। यदि जल संरक्षण नहीं किया गया तो आने वाले समय में इसकी कीमत सोने–चांदी से भी अधिक हो सकती है। सोचिए, जो पानी हमें प्रकृति ने नि:शुल्क दिया था, उसे बचाने में हम क्यों चूक रहे हैं?

जल का दुरुपयोग और समुद्र का बढ़ता जलस्तर : हमें लगता है कि बर्बाद किया गया अधिकतर पानी नालों से निकलकर नदी और समुद्र में चला जाता है, लेकिन यह समस्या को और बढ़ाता है। समुद्र में अत्यधिक जलभराव से जलस्तर बढ़ रहा है, जिससे कई तटीय इलाकों के डूबने का खतरा मंडरा रहा है। साथ ही, समुद्र में अधिक मीठा पानी मिलने से हाइपोक्सिक जोन (ऑक्सीजन की कमी वाले क्षेत्र) बनने लगते हैं, जिससे जलीय जीवों का जीवन संकट में आ जाता है।

कृषि में जल संरक्षण की तकनीकें : जल का सबसे अधिक उपयोग करने कृषि क्षेत्र में होता है। यदि हम जल–संरक्षण तकनीकों का उपयोग करें, तो पानी की काफी बचत हो सकती है। आधुनिक ड्रिप सिंचाई प्रणाली (Drip Irrigation) ऐसी ही एक तकनीक है, जिसमें पौधों की जड़ों तक बूंद–बूंद पानी पहुंचता है, जिससे जल की बर्बादी कम होती है और फसल की उत्पादकता बढ़ती है। इसी प्रकार, स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली भी खेतों में जल संरक्षण के लिए कारगर है।

जल संरक्षण के अनुकरणीय प्रयास : भारत में ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां लोगों ने जल संरक्षण को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बना लिया है–

अन्ना हजारे का गाँव रालेगण सिद्धि: महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले का यह गाँव पहले सूखा प्रभावित था, लेकिन प्रसिद्ध जनसेवक अन्ना हजारे जी ने यहां जल संरक्षण का अद्भुत कार्य किया। वर्षा जल संचयन, छोटे बांधों का निर्माण और जल पुनर्भरण तकनीकों का उपयोग कर गाँव को पानी की कमी से उबारा गया। आज रालेगण सिद्धि जल–संरक्षण का एक आदर्श उदाहरण बन चुका है।

राजस्थान की टांका पद्धति : राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में जल संग्रहण की प्राचीन विधि टांका पद्धति आज भी प्रासंगिक है। इसमें घरों के आंगन से बहकर आने वाला पानी एक बड़े भूमिगत टैंक (टांका) में इकट्ठा किया जाता है, जिससे पूरे साल पीने योग्य पानी उपलब्ध रहता है।

गुजरात का पारंपरिक जल संरक्षण : गुजरात में जल संग्रहण के लिए चेक डैम और स्टेग्नेंट वाटर टैंक जैसी विधियां अपनाई जाती हैं। विशेष रूप से कच्छ क्षेत्र में बारिश के पानी को बड़े टैंकों में संचित कर उपयोग किया जाता है। इससे न केवल जल की उपलब्धता बनी रहती है, बल्कि भूजल स्तर भी संतुलित रहता है।

हमारी उत्तरदायित्व : जल संरक्षण को बनाएं आदत: हमें जल संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि इसे अपनी आदत बनाना होगा। कुछ छोटे–छोटे कदम उठाकर हम जल संरक्षण में अपना योगदान दे सकते हैं–

♦ ब्रश करते समय नल खुला न छोड़ें।

♦ बर्तन और कपड़े धोते समय पानी कम से कम बहाएं।

♦ वर्षा जल संचयन (Rain Water Harvesting) अपनाएं।

♦ कृषि में आधुनिक जल संरक्षण तकनीकों का उपयोग करें।

निष्कर्ष - 'जल ही जीवन है'– यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक सच्चाई है। यदि हम आज जल बचाएंगे, तो कल हमें इसकी कमी नहीं होगी। जल संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। हमें जल का मूल्य समझना होगा, क्योंकि यदि आज हमने पानी नहीं बचाया, तो भविष्य में इसके बिना जीवन असंभव हो जाएगा।

'बूंद–बूंद से सागर भरता है,
बचा न सके तो जीवन तरसता है।'

आइए, हम सभी जल संरक्षण का संकल्प लें और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

■

ISSN No. 2581-3528

समरसता व रंगों का त्योहार होली

डॉ. कामिनी चौहान
झम्मनलाल पीजी कॉलेजए हसनपुर, अमरोहा

भारतीय संस्कृति में होली के त्योहार का प्रमुख स्थान है। भक्त प्रहलाद की श्री हरि विष्णु के चरणों में अनन्य भक्ति व श्रद्धा इस त्यौहार की आध्यात्मिक प्राण रेखा है

होली का यह पर्व फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष को पूर्णिमा तिथि के एक दिन पहले होलिका दहन करके मनाया जाता है तथा अगले दिन लोग एक दूसरे को रंग लगाकर समरसता का संदेश देते हैं इसलिए यह पर्व रंगों और समरसता के पर्व के रूप में मनाया जाता है। भारत के प्रमुख त्योहारों में इंद्रधनुषी रंगों की छठा बिखरने वाला यह त्यौहार भी है, क्योंकि इस महीने प्रकृति भी अपने रंग-बिरंगे फूल पत्तियों के साथ सुनहरे रंगों की छठा बिखेरती है अतः यह त्यौहार हमें प्रकृति से भी जोड़ता है । भारतीय संस्कृति में होली के त्योहार का प्रमुख स्थान है। भक्त प्रहलाद की श्री हरि विष्णु के चरणों में अनन्य भक्ति व श्रद्धा इस त्यौहार की आध्यात्मिक प्राण रेखा है। संस्कृत साहित्य में होली के अनेक रूपों का वर्णन मिलता है जैसे श्रीमद् भागवत महापुराण में रसों के समूह रस का वर्णन, हर्ष की प्रियदर्शिका व रत्नलीला तथा कालिदास की कुमारसंभव आदि प्राचीन ग्रंथों में होली का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त चंद्रवरदाई की पृथ्वीराज रासो में तथा आदिकाल कवि विद्यापति के से लेकर और रहीम, रसखान ,जायसी, मीरा, कबीर और रीतिकालीन कवि बिहारी व केशव आदि कवियों ने अपनी रचनाओं में होली का खूब उल्लेख किया है।

रंगों का यह पर्व होली पूरे भारत के हर प्रांत में अलग-अलग प्रकार से तथा बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र ब्रज की होली और बरसाने की लठ्ठमार होली है। ब्रज की होली का उत्सव 40 दिन तक चलता है जिसकी शुरुआत बसंत पंचमी से होती है और समापन रंगनाथ मंदिर में होता है। ब्रज में होली सिर्फ रंगों का खेल व त्यौहार नहीं बल्कि भगवान की भक्ति, प्रेम और परंपरा का एक अनूठा संगम है। यहां की होली में समाज गायन, पद गायन और फाग उत्सव की विशेष परंपरा है। जो इस देश दुनिया में अलग पहचान दिलाती है। ब्रज और बरसाने की होली को कृष्ण और राधा के प्रेम से जोड़कर देखा जाता है। यहां की होली में मुख्यतः नंद गांव के पुरुष व बरसाने की महिलाएं भाग लेती हैं। क्योंकि भगवान कृष्ण नंद गांव के थे और राधा रानी बरसाने की थीं। नंदगांव के पुरुषों की टोलियां जब पिचकारी लेकर बरसाने पहुंचती है तो बरसाने की महिलाएं उन पर खूब लाठियां बरसती हैं पुरुषों को इन लाठियां से बचाना होता है और बरसाने की महिलाओं को भिगोना भी होता है। इसके बाद मधुर व मन को आनंदित करने वाले होली गीत भी गए जाते हैं।

होली के त्यौहार का आध्यात्मिक महत्व

होली का त्योहार न केवल रंगों का त्यौहार है बल्कि इसका आध्यात्मिक पहलू भी है। यह त्यौहार आध्यात्मिक रूप से आपसी भेदभाव और अहंकार को तोड़ने और सद्भावना को

बढ़ाने का त्यौहार है। यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है और होलिका दहन के दिन होलिका दहन करके भूतकाल के बोझ को जला दिया जाता है। होली के रंगों से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। होली के दिन सफेद कपड़े पहनना आध्यात्मिक और शांति का प्रतीक है। होली के रंग शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता, शक्ति और ज्ञान जैसे आध्यात्मिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा परमात्मा की याद में होलिका दहन करके अपने विकारों को त्याग करते हैं। यह त्यौहार हमें बताता है कि अहंकार कितना भी सामर्थवान और शक्तिशाली क्यों ना हो सात्विक शक्तियों के समक्ष पराभूत हो ही जाता है। अतः असत्य, दुष्प्रवृत्ति पर सत्य एवं सद प्रवृत्तियों के विजय के रूप में होली का उत्सव का त्यौहार मनाया जाता है।

होली के त्यौहार का वैज्ञानिक महत्व : आध्यात्मिक महत्व के साथ–साथ इस त्यौहार का वैज्ञानिक महत्व भी है, जैसे होलिका दहन के समय आग जलाने से वातावरण में मौजूद बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं। होलिका दहन के समय परिक्रमा करने से तथा रंगों की मस्ती और ढोल नगाड़ों के बीच जब लोग जोर–जोर से गीत गाते और बोलते हैं तो शरीर में नई शक्ति और ऊर्जा का संचार होता है। होलिका दहन में घर का कचरा, खेतों की भूसी और सूखे पेड़ पौधों को जलाया जाता है जिससे घर की सफाई भी हो जाती है और वातावरण में भी शुद्ध हो जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि इस माह में मौसम में बदलाव होता है जिससे वातावरण में भी बदलाव होता है जिससे आलस बहुत बढ़ जाता है ऐसे में होली के गीत अन्य वाद्य यंत्र और रंगों की सोंधी खुशबू हमारे शरीर और वातावरण को नई ऊर्जा से भर देती है।

समरसता का त्योहार होली : होली समाज में समरसता और भाईचारे का त्यौहार माना जाता है। यह पर्व भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता सांप्रदायिक सद्भावना, स्नेह व प्रेम का प्रतीक माना जाता है क्योंकि इस पर पर लोग अपने पुराने गिले शिकवे भुलाकर गले मिलते हैं और एक दूसरे को गुलाल लगाकर आपसी भाईचारे और सौहार्द का संदेश देते हैं। इस दिन लोग ईर्ष्या और द्वेष और कटुता को त्याग कर, एक दूसरे के घर जाकर लोगों को रंग लगाकर भारतीय संस्कृति की अखंडता में एकता का संदेश पेश करते हैं। इस दिन सभी जाति धर्म के लोग आपस में मिलकर होली खेलते हैं अतः इस दिन निश्चय ही ऊंच–नीच व असमानता रूपी दैत्य का होलिका की तरह दहन होता है। इस पर्व का सबसे लोकप्रिय पकवान गुझियां होती हैं जो इस त्यौहार की सबसे परंपरागत मिठाई है। इस दिन लोग एक दूसरे को गले लगा कर गुझियां खिलाते हैं। इसके अतिरिक्त घरों में विशेष परंपरागत भोजन बनाने की परंपरा है। यह भोजन और मिठाई भी एक प्रकार से समाज के खंडित रिश्तों में मिठास घोलने का काम करते हैं और मानव जीवन में एक नया उत्साह, उमंग तथा जोश भरने का काम करते हैं।

रंगों का यह पर्व होली पूरे भारत के हर प्रांत में अलग-अलग प्रकार से तथा बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र ब्रज की होली और बरसाने की लठ्ठमार होली है। ब्रज की होली का उत्सव 40 दिन तक चलता है

पर आज के परिदृश्य में हमारे त्योहारों का स्वरूप संकुचित होता जा रहा है। क्योंकि समाज के कुछ बुद्धिजीवी व अन्य समुदाय के लोग त्योहारों को सीमित करने का अभियान चला रहे हैं। यह बुद्धिजीवी भी लोग कभी दिवाली के परंपरावादी कार्यक्रमों पर उंगली उठाते हैं और कभी होली के सांस्कृतिक स्वरूप पर। उनका कहना है की होली पर पानी का बहुत दुरुपयोग होता है जिससे प्राकृतिक स्रोतों का हनन होता है पर जब यह लोग पूरे वर्ष पानी का दुरुपयोग करते हैं तो उसका जवाब उनके पास नहीं होता। इन्हें शायद यह भी पता होना चाहिए कि अगर होली में कपड़ों पर रंग ही नहीं लगेगा तो इस होली का त्यौहार कैसे कहा जा सकता है। हम वर्ष के शेष दिनों में भी पानी को बचाने का अभियान चला सकते हैं।

अतः हमें अपने त्योहारों की सांस्कृतिक अवधारणाओं का भी ज्ञान होना नितांत जरूरी है। हमें ध्यान रखना होगा कि हम क्या थे? इसका जवाब है कि हम सांस्कृतिक थे, प्राकृतिक थे, विश्व को ज्ञान का बोध कराने वाले विश्व गुरु थे, तभी तो हमारे देश को विश्व गुरु कहा गया। होली भी एक सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक आधार के साथ मनाए जाने वाला त्यौहार है। हम होली को समरसता और सांस्कृतिक आधार के साथ मनाएंगे तो हम देश की संस्कृति को भी मजबूत आधार प्रदान करने का काम करेंगे। देश की रक्षा सिर्फ सीमा पर लड़ने से ही नहीं बल्कि अपने संस्कारों व संस्कृति की रक्षा करने से भी होती है। होली हमारा संस्कार है, होली हमारी संस्कृति है। इसलिए हम होली पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे। ■

ISSN No. 2581-3528

मेरी प्यारी चिड़िया (विश्व गौरैया दिवस 20 मार्च पर विशेष)

एक पक्षी के दर्द का फसाना था, टूटे थे पंख और उड़ते हुए जाना था।
तूफान तो झेल गया पर अफसोस, वह डाल टूट गई जिस पर उसका आशियाना था।।

जी हां हम बात कर रहे हैं मानव की सबसे प्यारी पक्षी, घरों में चहचहाती फुदकती उस नन्ही सी चिड़िया गौरैया की, जो प्राचीन काल से ही हमारे उल्लास, स्वतंत्रता एवं संस्कृति की संवाहक रही है। मानव की सबसे निकटतम मित्र गौरैया की संख्या में लगातार गिरावट आने से उनके विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। परंतु आज भी इस भौतिकतावादी युग में ऐसे मानवता प्रेमी लोग हैं जो 'जियो और जीने दो', तथा 'जीवों पर दया करो' के सिद्धांत को समर्पित है। प्रस्तुत है केशव संवाद पत्रिका की कार्यकारी संपादक डॉ. नीलम कुमारी द्वारा गौरैया मित्र क्लब, टीम वंडरफुल के सदस्य एवं नानकचंद ऐंग्लो संस्कृत कॉलेज मेरठ के सांख्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. विवेक त्यागी जी से साक्षात्कार पर आधारित संपादित अंश-

आपने गौरैया संरक्षण अभियान की शुरुआत कब की ?

मैंने गौरैया बचाओ अभियान की शुरुआत 2011 में की जब हमारे घर में गौरैया पंखे के बॉक्स में घोंसला बना रहीं थीं और उसके अंडे बार–बार गिर कर टूट रहे थे जिसे देखकर मेरा बेटा दुखी होता था।

इसका जिक्र जब मैंने अपने वरिष्ठ साथी प्रो. देवेश चन्द्र शर्मा जी से किया तो उन्होंने मुझे बताया कि वो स्वयं भी इस दिशा में काफी पढ़ रहे हैं और गौरैया की तेजी से घटती संख्या पर चिंतित हैं। इस तरह मेरठ में प्रो. देवेश चंद्र शर्मा जी के ही निर्देशन में हमने गौरैया बचाओ अभियान की शुरुआत की।

आपको गौरैया संरक्षण की प्रेरणा कहां से मिली ?

एक शाम खिड़की के पास गौरैया के करुण क्रंदन को देखकर मेरा दिल भर गया यह घटना उस समय की है जब हम रोज महाविद्यालय से लौटकर घर आते थे तो एक छोटी सी नन्हीं सी गौरैया ने एक छोटा सा घोंसला हमारे घर के अंदर बनाया था, परंतु पीड़ा की बात है कि जब भी हम आते हैं हमें उसका एक अंडा टूटा हुआ मिलता था। जब दो–तीन बार उसकी पुनरावृत्ति हुई तो मेरे मन में आया कि क्यों ना हम इसका एक कृत्रिम घोंसला बनवा दे, जिससे कि गौरैया के बच्चे और वह सुरक्षित रह सके। जैसे ही हमने वहां पर कृत्रिम घोंसला बनाया, धीरे–धीरे हमारे घर में नन्ही चिड़िया आने लगी और धीरे–धीरे हमारी दोस्त बन गयी। तब से हमारे मन में एक भावना घर कर गई कि हमें गौरैया को बचाने के लिए एक अभियान की शुरुआत करनी चाहिए।

एक बात और, आज भौतिकता की अंधी दौड़ में हमने गगनचुंबी भवन तो खड़े कर लिए लेकिन उन परिंदों के बारे में नहीं सोचा जो इन अट्टालिकाओं की भेंट चढ़ गए। अपनी इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में हम इतना वक्त नहीं निकाल पाते कि इस नन्ही सी जान के लिए आशियाना बना पाए बस यहीं से मुझे उस नन्ही सी चिड़िया को बचाने की प्रेरणा मिली।

आपका गौरैया मित्र क्लब क्या-क्या काम करता है और इसमें आपके साथ कौन-कौन लोग सम्मिलित हैं ?

हमारा 'गौरैया मित्र क्लब' और 'टीम वंडरफुल' पर्यावरण के क्षेत्र में और गौरैया संरक्षण अभियान को बढ़ावा देने के लिए कृत्रिम घोंसला बनवा कर देता है तथा स्कूल कॉलेज और कॉलोनी में वृक्षारोपण करना, स्वच्छता

ISSN No. 2581-3528

अमर उजाला

शुक्रवार • 20.03.202

...याद बनकर न रह जाए गौरैया

गौरैया जो एक समय तक गांवों-शहरों के हर घर में फुदकती नजर आती थी। गर्मियों में पानी के आसपास चहल कदमी करती थी गौरैया अब कहीं-कहीं ही नजर आती है। पेड़ों के कटते जाने और घरों के आसपास का माहौल बदलने के कारण उनकी संख्या लगातार घटती जा रही है। अगर लोगों ने गौरैया को बचाने के लिए पहल नहीं की तो वह दिन दूर नहीं जब गौरैया सिर्फ किताबों-कहानियों में ही याद बनकर रह जाएगी।

इन लोगों से लें सबक तो बदल जाए तस्वीर

2010 से मनाया जाता है गौरैया दिवस

ये रखें ध्यान

गौरैया को बचाने की करें पहल

माई सिटी रिपोर्टर

मेरठ। गौरैया को बचाने के लिए हर किसी को पहल करनी होगी। उसके लिए घरौंदे तैयार कराने होंगे। ऐसा नहीं किया तो एक दिन वह विलुप्त हो जाएंगी। यह बात शुक्रवार को गौरैया दिवस पर हुई संगोष्ठी में गौरैया के संरक्षण को लेकर काम कर रहे लोगों ने कही।

गौरैया मित्र एवं टीम वंडरफुल के संयुक्त तत्वावधान में गौरैया बचाओ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन शास्त्रीनगर में किया गया। वक्ताओं ने कहा कि आज कोरोना जैसी भीषण आपदा से सारा विश्व जूझ रहा है। यह आपदा चीन की 60 वर्ष

गौरैया दिवस पर हुई संगोष्ठी, उपहार में दिए लकड़ी के घरौंदे

बाद दूसरी भूल का परिणाम है। गौरैया मित्र मंडल के संस्थापक सदस्य प्रो. देवेश चंद्र शर्मा ने कहा कि चीन ने 1958 में प्रकृति के विरुद्ध आचरण करके खुद को नुकसान में डाल लिया। अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के नाम पर दो करोड़ गौरैया की हत्या करा दी गई। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि भयंकर अकाल और महामारी फैल गई। 50 लाख लोग मारे गए। जिस फसल की सुरक्षा के लिए गौरैया को मारा गया था, उसी फसल को उन कीड़ों ने खराब कर दिया, जिनको गौरैया खाती थी। चीन को जब अपनी भूल का अहसास हुआ तो रूस से डेढ़ करोड़ गौरैया आयात करनी पड़ीं। गौरैया मित्र मंडल के सदस्य डॉ. नवीन गुप्ता ने कहा यदि प्रकृति से छेड़छाड़ जारी रही तो पर्यावरण की बात बेमानी होगी। डॉ. विवेक त्यागी ने विश्व में घट रही गौरैया की संख्या के बारे में बताया। अनुज त्यागी ने गौरैया संरक्षण की मुहिम को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। संगोष्ठी में गोपाल भगत, प्रो. एके सिंह, डॉ. हरेंद्र सिंह, अशोक अग्रवाल, डॉ. गौरव दत्ता, हरि विश्नोई, डॉ. कपिल गर्ग, एडवोकेट हरीश त्यागी, ऐश्वर्या शर्मा, अनुकृति मौजूद रहे।

गौरैया दिवस पर शास्त्रीनगर में आयोजित कार्यक्रम में शामिल लोग। अमर उजाला

अभियान चलाना आदि का कार्य करता है। इस पुनीत कार्य में गौरैया मित्र क्लब के संस्थापक सदस्य प्रो. देवेश चंद्र शर्मा, डॉ नवीन गुप्ता, डॉ. देवेश टंडन , डॉ. हरीश गुप्ता, डॉ. के के शर्मा, डॉ. जितेंद्र तोमर मिलकर कार्य करते हैं।

अब तक आप गौरैया बचाओ अभियान के तहत कितने कृत्रिम घोंसले बनवा कर दे चुके हैं ?

अभी तक 'गौरैया मित्र क्लब' एवं 'टीम वंडरफुल' के संयुक्त प्रयास से हम सभी लोग लगभग 500 से अधिक कृत्रिम घोंसले या घर बनवाकर वितरण कर चुके हैं और साथ ही साथ पर्यावरण के क्षेत्र में अधिक से अधिक पेड़ लगाने व संरक्षण करने का कार्य कर रहे हैं।

गौरैया का घर में आना किस बात का संकेत है।

गौरैया का घर में आना बहुत शुभ होता है इसके आने से जीवन में मधुरता आती है, बिगड़ते हुए कार्य बनते हैं और कार्य क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

आप विश्व गौरैया दिवस पर हमारे पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगे।

विश्व गौरैया दिवस के अवसर पर हम सभी, विशेषतः युवा वर्ग गौरैया संरक्षण की शपथ लें और हमें चाहिए कि हम गौरैया के प्रति जागरूक होकर इन्हें बचाने के लिए घरों की छत पर पानी के बर्तन और पेड़ पौधे अधिक से अधिक लगायें ताकि गौरैया के साथ–साथ अन्य परिंदों का भी जीवन बच सके।

आपने बिल्कुल सही कहा कि अगर हम अपने पर्यावरण को बचाना चाहते हैं और आने वाली पीढ़ी को गौरैया के बारे में जागरूक करना चाहते हैं तो गौरैया का संरक्षण अति आवश्यक है। अन्यथा वह दिन दूर नही जब गौरैया सिर्फ किताबों और कहानियों में याद बनकर रह जायेगी।

महादेवी वर्मा के शब्दों में –

आँधी आई जोर शोर से,
डालें टूटी हैं झकोर से।
उड़ा घोंसला अंडे फूटे,
किससे दुख की बात कहेगी!
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

हमने खोला अलमारी को,
बुला रहे हैं बेचारी को।
पर वो चीं–चीं करती है
घर में तो वो नहीं रहेगी!

घर में पेड़ कहाँ से लाएँ,
कैसे यह घोंसला बनाएँ!
कैसे फूटे अंडे जोड़ें,
किससे यह सब बात कहेगी!
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?

ISSN No. 2581-3528

डॉ. हेडगेवार एक आत्म-जागृत व्यक्तित्व थे जिन्होंने गौरवशाली भारत के पुनरुद्धार का मार्ग प्रशस्त किया

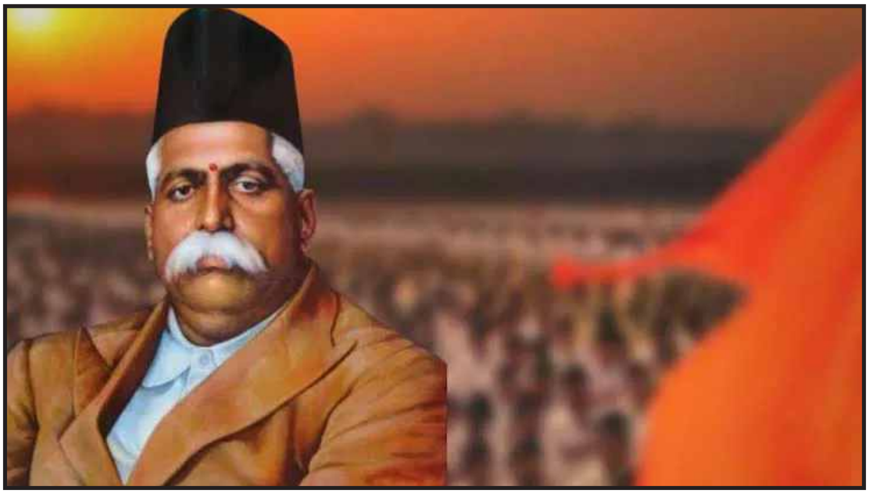

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल
ब्लॉगर एवं शिक्षाविद्

डॉ. हेडगेवार की विचारधारा किसी धर्म को नष्ट करने की नहीं, बल्कि हिन्दुओं को एकजुट करने की है, जिससे समाज और राष्ट्र मजबूत हो। उन्होंने महसूस किया कि अधिकांश लोग महान भारतीय संस्कृति के मूल को भूल गए हैं, गुलाम मानसिकता पैदा कर रहे हैं और अपनी लड़ाई की भावना खो रहे हैं। लोग राष्ट्रीय चरित्र बनाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए तैयार नहीं हैं।

यदि हम पिछले चार दशकों में भारत और दुनिया भर में सामाजिक– राजनीतिक और धार्मिक स्थिति का अध्ययन करते हैं और डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार की दृष्टि, मिशन और विचारधारा का ईमानदारी से विश्लेषण करते हैं, तो हम वास्तव में धन्य महसूस करते हैं कि 100 साल पहले, जब भारतीयों ने एक औपनिवेशिक मानसिकता विकसित की थी, जो उनकी अपनी संस्कृति और धर्म को कमजोर कर रही थी, एक स्पष्ट भविष्यवादी सोच वाले ऐसे महान व्यक्तित्व का हमें आशिर्वाद मिला। उस समय, कई बुद्धिजीवियों ने हिंदुओं को एकजुट करने और प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र को विकसित करने की विचारधारा के लिए डॉ. हेडगेवार का मजाक उड़ाया। कल्पना कीजिए कि इस महान राष्ट्र का क्या होता अगर डॉक्टर जी का संगठन और बाद में डॉ. हेडगेवार और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाद के सरसंघचालक से प्रेरित कई संस्थान और संगठन विभिन्न क्षेत्रों और विभाजित समाज के सभी वर्गों में काम करना शुरू नहीं करते। वामपंथी–इस्लामी–मिशनरी तिकड़ी ने, डीप स्टेट वैश्विक बाजार शक्तियों के समर्थन से, इस राष्ट्र को टुकड़ों में तोड़ दिया होता, तथा इसे सबसे गरीब राज्य और समाज बना दिया होता, जो अपनी जड़ों को भूल गया है और इस्लामी तथा ईसाई जड़ों को पूरी तरह से आत्मसात कर लिया है।

मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? इस तथ्य के बावजूद कि कई संस्थान और संगठन डॉक्टर हेडगेवार की विचारधारा से प्रेरित हैं, हम अभी भी देख रहे हैं कि कैसे वामपंथी–इस्लामी–मिशनरियों का एक समूह हिंदुओं को विभाजित करके और इस्लाम और ईसाई धर्म के पक्ष में विचारधाराओं को बढ़ावा देकर इस देश को कमजोर करने का प्रयास कर रहा है। वे कुछ हद तक प्रभावी रहे हैं, लेकिन पूरी तरह से नहीं, डॉ हेडगेवार के दृष्टिकोण और मिशन के परिणामस्वरूप, जिसे लाखों स्वयंसेवकों, कई संस्थानों और संगठनों द्वारा जोरदार तरीके से आगे बढ़ाया गया है। स्वतंत्रता के बाद, राजनीतिक व्यवस्था को वामपंथी–इस्लामी–मिशनरी ताकतों ने हाईजैक कर लिया, जिससे उनके लिए कुछ भी करना आसान हो गया। हालाँकि, दशकों से बनी मजबूत जमीनी ताकत और डॉ हेडगेवार से प्रेरित होकर हर समय उनकी भारत विरोधी योजनाओं का समय समय पर पुरजोर विरोध किया।

डॉक्टर हेडगेवार को हिंदुओं को एक साथ लाने के लिए एक संगठन क्यों बनाना पड़ा?

गलत यह हुआ कि भारत पर कई आक्रमण हुए, यूरोपीय और मुगलों ने हमारा शोषण किया, महान संस्कृतियों को नष्ट किया और

ISSN No. 2581-3528

हमें सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर किया। परिणामस्वरूप, यह महत्वपूर्ण था कि हिंदू एकजुट हों ताकि हम फिर से गुलाम न बनें। आइए इस कहानी से जानें कि डॉक्टर हेडगेवार ऐसा क्यों मानते थे। दिन भर में, हिरण घास खाता है और इसे प्रोटीन में बदल देता है। दूसरी ओर, मांसाहारी जीव तब तक शांति से सोते हैं जब तक उन्हें भूख नहीं लगती। क्योंकि वे जानते हैं कि हिरण उनके लिए प्रोटीन तैयार कर रहे हैं। वे अच्छी तरह से जानते हैं कि हिरणों के प्रयास उनकी जरूरतों के अनुरूप हैं, और उन्हें केवल हिरणों पर हमला करने के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है। जब तक हिरणों की आबादी स्वस्थ है, तब तक भयानक जानवर जंगल में चैन की नींद सोते हैं, लेकिन जैसे ही हिरणों की आबादी कम होती है, भूखा खूंखार भेड़िया एक नया जंगल तलाशता है। हिंदू हिरणों द्वारा धन, सोना, रत्न, ज्ञान, विज्ञान, भूमि, वाणिज्य और उद्योग इकट्ठा करने के लिए कड़ी मेहनत करने के बाद क्या हुआ? यह सब तब शुरू हुआ जब एक भयानक नई नस्ल सामने आई और उसने ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश और अब कश्मीर, केरल, बंगाल और असम को साफ कर रहा है। यह नस्ल केवल शिकार करने के लिए विकसित हुई है, और जब लोग सतर्क रहना बंद कर देते हैं, तो वे महान सांस्कृतिक परंपराओं और अंत में अपने देश के सम्मान और विरासत को खो देते हैं।

डॉक्टर हेडगेवार की विचारधारा किसी धर्म को नष्ट करने की नहीं, बल्कि हिंदुओं को एकजुट करने की है, जिससे समाज और राष्ट्र मजबूत हो। उन्होंने महसूस किया कि अधिकांश लोग महान भारतीय संस्कृति के मूल को भूल गए हैं, गुलाम मानसिकता पैदा कर रहे हैं और अपनी लड़ाई की भावना खो रहे हैं। लोग राष्ट्रीय चरित्र बनाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए तैयार नहीं हैं। समाज को मुख्य रूप से जाति के आधार पर लड़ने के लिए ढाला गया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि लोग कभी भी ब्रिटिश और मुगल शासन का विरोध करने के लिए एक साथ नहीं आते हैं। महान वेदों, उपनिषदों और भारतीय सभ्यता के खिलाफ दिमाग में जहर भर गया था। लोग छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप और स्वामी विवेकानंद जैसे महान योद्धाओं और संतों को भूल गए थे... वे भगवद गीता और चाणक्य नीति के गहन ज्ञान को भूल गए थे।

सबसे महत्वपूर्ण अहसास 'शत्रुबोध' था, जिसका मतलब था कि लोगों ने यह भेद करने की क्षमता खो दी थी कि कौन उनका मित्र है और कौन उन्हें नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप जनता और उनके नेताओं के बीच काफी दरार पैदा हो गई थी। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न समूहों के लिए अतिरिक्त शत्रु पैदा हो गए थे, साथ ही अनावश्यक बहस भी होती थी। इससे समाज के ताने–बाने को और सनातन धर्म को नुकसान पहुंचा है। इस्लाम और ईसाई धर्म में धर्मांतरण बढा है।

एक आत्म-जागृत असाधारण व्यक्तित्व जिसने आरएसएस की स्थापना की।

इन सभी अनुभूतियों ने डॉ. हेडगेवार को अपने विचारों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया। भारत की सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक महानता को पुनर्स्थापित करने के लिए, बहुआयामी दृष्टिकोण वाले जमीनी स्तर के कार्यबल की आवश्यकता थी, ताकि हमारा राष्ट्र इतना मजबूत हो कि कोई भी इस पर फिर से आक्रमण करने की हिम्मत न करे। अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों के आधार पर, उन्होंने हिंदू समाज के पुनर्निर्माण के लिए सभी को एकजुट करने और एक शक्ति, एक संगठन बनाने के महत्व को समझा। इस तरह के विचार को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने 1925 में विजयादशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। राष्ट्रीय उत्थान के लक्ष्य के प्रति उनका निस्वार्थ समर्पण इस तथ्य में देखा जा सकता है कि, आरएसएस के गठन, विकास और प्रभाव के पीछे प्रेरणा होने के बावजूद, वे हमेशा सुर्खियों में आने के लिए तैयार नहीं थे। इस प्रकार वे एक उदाहरण बन गए कि एक व्यक्ति को स्वार्थ और महत्वाकांक्षा को त्यागते हुए सार्वजनिक रूप से कैसे व्यवहार करना चाहिए। डॉ. हेडगेवार को लोगों, समाज या राष्ट्र के लिए जो भी काम करते थे, उसका श्रेय लेने की कोई इच्छा नहीं थी। एक क्रांतिकारी के रूप में उन्हें जमीन से काम करने की शिक्षा दी गई थी और उन्होंने इस आदर्शवाद को अपने व्यक्तित्व के अनिवार्य हिस्से के रूप में आत्मसात कर लिया था। संघ की स्थापना के एक दशक बाद भी मध्य प्रांत सरकार का मानना था कि हिंदू महासभा के नेता और डॉ हेडगेवार के निकट सहयोगी डॉ बी एस मुंजे ही आरएसएस के सच्चे संस्थापक थे। अपने जीवनकाल में उन्होंने अपनी जीवनी के निर्माण को सक्रिय रूप से हतोत्साहित किया। डॉ हेडगेवार ने दामोदर पंत भाफ के बार–बार अनुरोध के बावजूद संघ और उनके प्रति सम्मान के लिए आभार व्यक्त किया। आप मेरा जीवन विवरण प्रकाशित करना चाहते हैं। हालाँकि, मैं खुद को एक महान व्यक्ति नहीं मानता या मेरे जीवन की ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ नहीं हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता हो। संक्षेप में, मेरा जीवन असामान्य व्यक्तिगत जीवनियों से मेल नहीं खाता। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इस कार्य को आगे न बढ़ाएँ। डॉ हेडगेवार के बारे में पहली छोटी पुस्तिका उनकी मृत्यु के बाद ही प्रकाशित हो सकी। डॉ. हेडगेवार के भाषणों, प्रकाशनों और स्मरणों को मध्य प्रांत के समाचार पत्रों में व्यापक रूप से कवर किया गया। पूर्व शोध की कमी के कारण, डॉ. हेडगेवार के जीवन के कई पहलू, जिनमें उनके सामाजिक और राजनीतिक विचार शामिल हैं, अज्ञात हैं।

इस महान दूरदर्शी को उनकी भविष्यदर्शी अंतर्दृष्टि और राष्ट्र निर्माण पहल के लिए कोटि कोटि प्रणाम। ■

डॉ. हेडगेवार के भाषणों, प्रकाशनों और स्मरणों को मध्य प्रांत के समाचार पत्रों में व्यापक रूप से कवर किया गया। पूर्व शोध की कमी के कारण, डॉ. हेडगेवार के जीवन के कई पहलू, जिनमें उनके सामाजिक और राजनीतिक विचार शामिल हैं, अज्ञात हैं।

ISSN No. 2581-3528

पर्यावरण की भारतीय दृष्टि

प्रोफेसर डॉ. हरेन्द्र सिंह
सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री'
पुरस्कार से विभूषित ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद्,
शैक्षिक प्रशासक, प्रोफेसर एवं राष्ट्रवादी चिंतक

वेद इस संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ हैं, जिनकी रचना भारत की भूमि पर हुई है। वेद पृथ्वी पर एक सुंदर प्राकृतिक वातावरण की परिकल्पना करते हैं और मनुष्य को प्रदूषित न करने का आदेश देते हैं। ऋग्वेद में उल्लेख है कि ब्रह्मांड में पांच मूल तत्व अर्थात् पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और अंतरिक्ष (ईथर) शामिल हैं। हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों, मनीषियों मुनियों आदि ने मानव जीवन के कल्याण के लिए प्रकृति एवं पर्यावरण के महत्व को समझा था। पर्यावरण शब्द का अर्थ है चारों ओर से आच्छादित या ढका हुआ माना जाता है। विश्व का प्रत्येक प्राणी अपने चारों ओर के वातावरण पर आश्रित रहता है। पर्यावरण की इस परिधि में वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा समस्त दिशाएं, पर्वत, मेघ, वनस्पति, पशु आदि समाहित है। यजुर्वेद में भी पर्यावरण की परिभाषा दी गई हैं–'परितः आवृणोतित पर्यावरणम्' अर्थात् जो चारों ओर से आवृत करता है वही पर्यावरण है।

प्राचीन काल से ही भारत में पर्यावरण के विविध स्वरूपों को "देवताओं" के समकक्ष मानकर उनकी पूजा अर्चना की जाती है। पृथ्वी को तो "माता" का दर्जा दिया गया है। अथर्वेद के भूमिसूक्त में कहा है, "माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या" अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है एवं हम सभी देशवासी इस धरा की संतान हैं, प्रत्येक प्राणी, वनस्पति एवं प्रत्येक चैतन्ययुक्त वस्तु पर प्रकृति का बराबर स्नेह है। इसी प्रकार पर्यावरण के अनेक अन्य घटकों यथा पीपल, तुलसी, वट के वृक्षों को पवित्र मानकर पूजा जाता है। अग्नि, जल एवं वायु को भी देवता मानकर उन्हें पूजा जाता है। समुद्र, नदी को भी पूजन करने योग्य माना गया है। गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी, सिंधु एवं सरस्वती आदि नदियों को पवित्र मानकर पूजा जाता है। हमें, हमारे पूर्वजों द्वारा पशु एवं पक्षियों का भी आदर करना सिखाया जाता है। इसी क्रम में गाय को भी माता कहा जाता है।

प्रकृति की ओर देखने की हमारी दृष्टि कैसी हो? यजुर्वेद में कहा गया है– **मित्रस्यमा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।** अर्थात्, सब मेरी ओर मित्रभाव से देखें। मैं भी प्रकृति को मित्र होकर देखूं। हम दोनों आपस में एक–दूसरे को मित्रवत देखें। पर्यावरण व प्रकृति के प्रति यह भारतीय दृष्टि यजुर्वेद में अभिव्यत हुई है।

भारतीय चिंतन और संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है जितना की मानव का अस्तित्व। ऋषि–मुनियों ने प्राकृत सत्ता में सभी प्राणियों को स्वीकार किया है और वैदिक काल से ही स्वस्थ्य रहने के लिए मानव देवों से प्रार्थना करता आया है। यथा –

वाऽम् असन् नसोः प्रायः चश्रुरक्षणोः श्रोतं कर्णयोः।
अपलिता केशा अशोणा दन्ता बहु बाहवोर्बलत्।।

अर्थात् देवों ने हमारी जो आयु निर्धारित की है उसे हम सब पूर्ण कर सकते हैं। जब मुख में वाणी हों, नासिक्य में प्राण हो, आँखों में देखने के लिए सामर्थ्य हो, कर्णेन्द्रियों में सुनने की क्षमता हो, बालों में पकने का दोष न हो, दन्त स्वच्छ और बाहुओं में बल बना रहे।

प्रकृति और पर्यावरण की यह भारतीय दृष्टि ही सबको सुखी रखने का मार्ग है। सृष्टि के विकासक्रम की वैज्ञानिक व्याख्या इस तथ्य को स्थापित करती हैं। सृष्टि में केवल जन ही नहीं हैं, उसमें जल, जंगल, जमीन और जानवर भी हैं। भारतीय चिंतकों ने इस सबकी अस्तित्व–रक्षा

की भी चिंता की है, यह उपरोत वैदिक प्रार्थनाओं से ध्यान में आता है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को दैवतुल्य स्थान प्राप्त है। भारतीय संस्कृति में वेदों, पुराणों, धार्मिक ग्रन्थों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। आदिम सभ्यता से ही प्रकृति के विविध रूपों यथा – सूर्य, चन्द्रमा, धरती, नदी, पर्वत, पीपल, गाय, बैल आदि की पूजा का विधान भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। पर्यावरण मनुष्य की जीवनदायिनी सत्ता है। भारतीय संस्कृति में भौगोलिक, खगोलीय एवं प्राकृतिक पर्यावरण की चिंता के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक पर्यावरण के प्रति भी विशेष ध्यान दिया गया है। हमारे मूलभूत संस्कारों में, धर्म में ऐसे पवित्र विचारों को शामिल कर दिया गया है कि हम स्वतः मानसिक, वाचिक एवं कायिक सुचिता का व्यवहार करें। प्रकृति तत्वों के साथ हमने रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करके उन्हें अपने व्यक्तित्व के साथ पूरी तरह जोड़ लिया है। पर्यावरण का अर्थ है – जीवन को संरक्षण प्रदान करने वाला कवच अर्थात् हमारे चारों ओर का आवरण। पर्यावरण संरक्षण से अभिप्राय है कि हम अपने चारों ओर के आवरण को संरक्षित करें तथा उसे अनुकूल बनाए। पर्यावरण और प्राणी एक–दूसरे पर आश्रित है। यही कारण है कि भारतीय चिन्तन परंपरा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है, जितना यहाँ मानव जाति का ज्ञात इतिहास है। आदिवासियों के संदर्भ में जल, जंगल, जमीन का महत्व आज भी नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। सृष्टि में प्राणी–मात्र का जीवन प्रकृति के बिना असम्भव प्रायः है। प्राकृतिक असन्तुलन के कारण बढ़ते तापमान से हिमखण्ड पिघल रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग की भयावह स्थिति से पूरा विश्व आंतकित है, जिसका निवारण आज एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है।

ऋग्वेद में प्रार्थना की गई है कि वृक्ष, जल, आकाश एवं पर्यावरण की वेणीयाँ तथा वनस्पतियों से भरे पूरे वन और पर्व हमारा संरक्षण करें। ऋग्वेद में उल्लेखित है, 'वनं आस्थाप्यध्वम्' अर्थात् वन में वनस्पतियाँ उगाओ, वृक्षारोपण करो। वानस्पतिक संपदा के भंडार में वृद्धि करो, उसे घटाओ नहीं। यजुर्वेद के एक सूत्र में कहा गया है कि हे वनस्पति! इस धारदार कुल्हाड़े से अपने महान सौभाग्य के लिए मैंने तुम्हें काटा अवश्य है, परंतु तेरा उपयोग हम सहस्र अंकुर होते हुए करेंगे।

प्राचीन ऋषि–मुनियों व महापुरुषों ने पर्यावरणीय चेतना को जन–जीवन से जोड़ दिया था। उनकी सूझ–बूझ गहन एवं व्यापक थी। संस्कृति संस्कारों का ही समुच्चय है। प्रकृति के साहचर्य में ही हमारी संस्कृति फली–फूली। हमारी संस्कृति अरण्य प्रधान रही है। वनों में ही उपनिषदों की रचना हुई। हिमालय योगी, मुनियों की तपोस्थली रही है। तीन प्रसिद्ध अरण्य नेमिषारण्य, दण्डकारण्य एवं पुष्करारण्य इस बात के प्रतीक हैं। गीता का यह श्लोकांश 'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्...वृक्षों की पर्यावरण को संतुलित रखने की महती भूमिका को रेखांकित करने का सजीव उदाहरण है कि वृक्षों में भी जीवन है।

प्राचीन काल से ही भारत में पर्यावरण के विविध स्वरूपों को 'देवताओं' के समकक्ष मानकर उनकी पूजा अर्चना की जाती है। पृथ्वी को तो 'माता' का दर्जा दिया गया है। अथर्वेद के भूमिसूक्त में कहा है, 'माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या' अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है एवं हम सभी देशवासी इस धरा की संतान हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति का मूल उद्घोष एवं आदर्शवाक्य में भी हम सभी के कल्याण की बात करते है –सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दुःखभाग भवेत।। अर्थात् यहाँ सभी सुखी एवं स्वस्थ्य हों, यही कामना की गई है। समान्यतः पर्यावरण के अन्तर्गत प्रकृतिजन्य सभी तत्व– आकाश, जल, वायु, अग्नि, ऋतुएँ, पर्वत, नदियाँ, सरोवर, वृक्ष, वनस्पति, जीव–जन्तु, ग्रह, नक्षत्र, दिशाएँ एक तरह से अखिल ब्रह्माण्ड ही सम्मिलित हो जाता है।

पर्यावरण की भारतीय दृष्टि में पर्यावरण संचेतना के विषय में मैंने विभिन्न प्रदूषण एवं निवारण की चर्चा की है, जिसमें वर्तमान की अपेक्षा वैदिक कालीन ऋषि–मुनियों की विचारधारा मानव हित में रहा है जो भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। वैदिक मंत्रों में उल्लेख है –ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। अर्थात् मनुष्य अपनी इच्छाओं को वश में रखकर प्रकृति से उतना ही ग्रहण करें कि उसकी पूर्णता को क्षति न पहुँचे।

आज सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण तथा उसके क्षरण व प्रदूषण की चर्चा चारों ओर है, इसके संरक्षण का उपाय भी हमारे भारतीय चिंतन में मिलता है, ऋग्वेद में कहा गया है कि –

'स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्या चन्द्र मसाविव। पुनर्ददतोध्नता जानता संगमेमदि।।' तथा पृथ्वीः पूः च उर्वी भव।' अर्थात्, समग्र पृथ्वी, सम्पूर्ण परिवेश परिशुद्ध रहे, नदी, पर्वत, वन, उपवन सब स्वच्छ रहें, गाँव, नगर सबको विस्तृत और उत्तम परिसर प्राप्त हो, तभी जीवन का सम्यक् विकास हो सकेगा।

आज की आवश्यकता है कि हम अपनी परम्पराओं के प्रति निष्ठावान हों। उसको आज के संदर्भ के साथ रहकर जब हम लोगों को बतायेंगे तब जो लोकचेतना जागृत होगीं वह अंधविश्वास की कथित दीवार को ही गिराकर मनुष्य के मन में जगी हुई भौतिकता की कामना पर भी अंकुश लगायेगी। संयम, संतुलन एवं सामंजस्य के सहारे पर्यावरण की रक्षा में प्रगति सार्थक तथा स्थायी होगी। यह ध्यान रखना होगा कि सामने वाले व्यक्ति की प्रवृत्ति तथा तथ्य को समझने की क्षमता के अनुरूप ही बात को रखा जाय। हमारी बात उसे बोझिल या परिहासपूर्ण एवं उपेक्षणीय न लगे।

चूँकि हमारी भारतीय संस्कृति सदैव ही "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव लिए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत।।' की भावना से ओतप्रोत रही है अतः हमें इसी भावना के साथ पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए अनवरत कार्य करते रहना चाहिए। ■

ISSN No. 2581-3528

लोकमाता अहिल्याबाई का कृषि और कौशल विकास मॉडल : एक सतत् प्रगति का दृष्टांत

प्रो. रूबी मिश्रा
प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय इतिहास के पन्नों में सबसे अनभिज्ञ परन्तु एक कुशल शासकों में से एक रानी अहिल्याबाई होल्कर अपने प्रगतिशील शासन और समाज कल्याण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के लिए जानी जाती हैं। उनके उल्लेखनीय योगदानों में कृषि के प्रति उनका समर्पण था, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि उनके शासनकाल में किसान आर्थिक और सामाजिक रूप से समृद्ध हों। अहिल्याबाई ने किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने कृषि संपत्तियों को ना केवल डकैतों और लुटेरों से बचाया बल्कि इन भील समाज के लोगों को शिल्प शिक्षा एवं दस्तकारी सिखाकर मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया! जिससे किसानों की सुरक्षा और स्वामित्व सुनिश्चित हुआ। वित्तीय बोझ को कम करने के लिए, उन्होंने कृषि करों को कम किया, जिससे किसानों को बहुत ज़रूरी राहत मिली। उनके सुधारों ने किसानों पर आर्थिक दबाव को काफी हद तक कम किया और कृषि के प्रति उनके उत्साह को फिर से जगाया।

खेती में नवाचार के महत्व को पहचानते हुए, अहिल्याबाई ने किसानों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी। उन्होंने किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से परिचित कराने के लिए विशेषज्ञों को भेजा और उन्हें फल और सब्ज़ियाँ उगाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कृषि प्रदर्शनियों का आयोजन किया, जिससे किसानों के लिए ज्ञान साझा करने, नई खेती के तरीकों को अपनाने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए एक मंच तैयार हुआ। अहिल्याबाई किसानों को उनके प्रयासों के लिए उचित मुआवज़ा दिलाने के लिए गहराई से प्रतिबद्ध थीं। उन्होंने उनके कर्ज माफ़ किए और फसलों के लिए उचित मूल्य की गारंटी देने के लिए व्यवस्थाएँ लागू कीं। इन उपायों ने न केवल किसानों की वित्तीय स्थिरता में सुधार किया, बल्कि प्रशासन में उनका विश्वास भी बढ़ाया। कृषि के प्रति उनका समग्र दृष्टिकोण आर्थिक लाभों से परे था। अहिल्याबाई ने कृषि को सामाजिक विकास के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में देखा। उन्होंने ऐसा माहौल बनाया जहाँ किसान फल-फूल सकें, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हो। उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने एक टिकाऊ और समावेशी कृषि समाज की नींव रखी।

कृषि के अलावा, अहिल्याबाई के शासन ने उद्योगों और शिल्प को बढ़ावा दिया। उन्होंने बुनकरों को अपने राज्य में आमंत्रित किया और उन्हें महेश्वर किले की जटिल नक्काशी से प्रेरित होकर अद्वितीय डिज़ाइन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस पहल ने न केवल महेश्वर साड़ियों की सांस्कृतिक पहचान को बढ़ाया, बल्कि कारीगरों को रोजगार और आर्थिक स्थिरता भी प्रदान की। सामाजिक कल्याण में अहिल्याबाई का योगदान भी उतना ही सराहनीय था। उन्होंने दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों सहित हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान के लिए अथक प्रयास किए। उन्होंने इन समूहों के लिए शिक्षा और कौशल विकास पर जोर दिया, उन्हें कार्यबल में एकीकृत किया और समावेशी विकास को बढ़ावा दिया। उनकी पहल 'कौशल भारत' और 'स्थानीय से मुखर' जैसी आधुनिक सरकारी योजनाओं से मेल खाती है, जिसका उद्देश्य स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना और स्वदेशी शिल्प को बढ़ावा देना है। कृषि में सतत विकास, उपज के लिए उचित मूल्य निर्धारण, सिंचाई सुधार और उन्नत कृषि तकनीकों पर उनका ध्यान समकालीन कृषि नीतियों के उद्देश्यों को दर्शाता है। अहिल्याबाई के सुधारों ने सुनिश्चित किया कि किसानों को उनके श्रम के लिए योग्य पुरस्कार मिले, उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा मिली।

अतः रानी अहिल्याबाई होल्कर के शासनकाल ने दूरदर्शी नेतृत्व का उदाहरण दिया जिसने कृषि प्रगति को सामाजिक उत्थान के साथ सहजता से एकीकृत किया। उनकी विरासत सतत् विकास और सामाजिक कल्याण को प्राप्त करने के उद्देश्य से आधुनिक नीतियों के लिए मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करती है। अहिल्याबाई का योगदान, विशेष रूप से कृषि और सामुदायिक सशक्तिकरण में, अधिक न्यायसंगत और समृद्ध समाज की दिशा में प्रयासों को प्रेरित करना जारी रखता है। उनकी दूरदर्शिता और प्रगतिशील दृष्टिकोण ने न केवल उनके समय में बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत किया है। रानी अहिल्याबाई होल्कर के शासनकाल को 'शिवयुक्त शासन' के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो शिव के सिद्धांतों पर आधारित है, जैसे कि सत्य, न्याय, करुणा, और सेवा। उनके शासनकाल में कृषि के प्रति उनका समर्पण, किसानों के अधिकारों की रक्षा, और समुदायों को सशक्त बनाने के प्रयासों ने उनके 'शिवयुक्त शासन' को एक मिसाल के रूप में प्रस्तुत किया है।

उनकी विरासत आज भी प्रासंगिक है और हमें सतत विकास, सामाजिक न्याय, और समुदायों को सशक्त बनाने के लिए प्रेरित करती है। रानी अहिल्याबाई होल्कर का जीवन और कार्य। हमें एक सच्चे नेता की छवि प्रस्तुत करते हैं, जो अपने लोगों की सेवा और समर्पण के लिए अपना जीवन समर्पित करते हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

आस्था सब पर भारी

विश्व में भारत की अलग–अलग पहचान है, प्राचीन भारत की पहचान ज्ञान से, विज्ञान से, धन से, पराक्रम तथा आस्था आदि से होती आई है। परंतु वर्तमान समय में महाकुंभ में उमड़े जनसैलाव ने ये साबित कर दिया कि भारत में आज भी आस्था में कोई कमी नहीं आई है, बल्कि आस्था पूर्व से ज्यादा ही बढ़ी है। डेढ़ सौ करोड़ की आबादी वाले देश में एक धार्मिक आयोजन में साठ करोड़ से अधिक लोग सहभागी हो ये आस्था की बड़ी उपलब्धि है। इसबार के महाकुंभ में देश की आधी आबादी ने कुंभ में स्नान करके ये साबित कर दिया है कि आस्था से बढ़कर कुछ नहीं। जबसे विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन महाकुंभ शुरू हुआ तभी से तरह–तरह की भ्रांतियां विपक्ष सहित देश विदेश से फैलाई गईं। यंहा तक कि मौनी अमावस्या पर तथा दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ में लोगों की जान भी गई, इसके बावजूद आस्था में डूबे लोगों ने महाकुम्भ में जाना नहीं छोड़ा। धार्मिक गुरुओं, महाकुंभ आयोजकों तथा यूपी व केंद्र सरकार ने जितनीं संख्या का अनुमान लगाया तहस उससे बहुत अधिक लोगों ने इस विश्व आयोजन में आस्था की डुबकी लगाई है। तरह–तरह के दुष्प्रचार किये गए कि व्यवस्था खराब है, पानी दूषित है, भीड़ निरंकुश है, आदि सब सुनने के बाद भी लोगों ने जाना नहीं छोड़ा। भगदड़ में जो जनहानि हुई उसको बहुत बढ़ा–चढ़ा कर देश व विदेश में प्रसारित किया गया परन्तु आस्था सभी पर भारी ही पड़ती दिखाई दी। लम्बी–लम्बी यातयात लाइनों के बाबजूद, भारत ही नहीं एशिया के सबसे लंबे जाम के बाबजूद भी आस्था कमजोर नहीं हुई। इस महाकुंभ में छः अमृत स्नान हुए जिनमे संख्या कम न हुई। पहला स्नान पौष पूर्णिमा को जिसमे पौने दो करोड़ ने डुबकी लगाई, मकर संक्रांति पर साढ़े तीन करोड़, मौनी अमावस्या पर आठ करोड़, बसन्त पंचमी पर ढाई करोड़, माघ पूर्णिमा पर सवा दो करोड़ तथा महाशिवरात्रि पर डेढ़ करोड़ लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई। इस महा अयोजन को विफल करने के भरपूर प्रयास भी किये गए परन्तु इस आयोजन ने विश्व को ये बता दिया है कि आस्था पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। इस महाकुंभ से कई सन्देश समाज को गए है। देश में सनातन को कमजोर करने के लिये जातिगत विग्रह लगातर चला आ रहा है, इस महाकुंभ ने किसी भी प्रकार के भेदभाव को दूर करने का बड़ा प्रभावी व आवश्यक उदाहरण समाज को दिया है। एक ही घाट पर सनातन धर्म की सभी जातियों के लोगों ने बड़े उत्साह के साथ स्नान किया, सभी ने साथ–साथ भोजन किया। अमीर गरीब, शिक्षित अशिक्षित, नौकर अधिकारी, शहरी ग्रामीण, सामान्य तथा प्रसिद्ध सभी ने एक साथ एकरूपता के साथ संगम में डुबकी लगाई। ये विश्व में एकमात्र उदाहरण है। ये महाकुंभ पहला है जिसमें हर सम्प्रदाय के सन्तों ने स्नान किया। यहां तक कि सनातन धर्म से अलग कई धर्मों के लोगों ने भी बड़ी आस्था के साथ इसमें सहभागिता की है। इस्लाम ईसाइयत तथा बौद्ध धर्म के मानने वाले लोगों ने भी इसमें आकर आस्था दिखाई है। विश्व के लगभग सभी मुस्लिम व ईसाई देशों में इस महाकुंभ की जानकारी के लिए गूगल पर जानकारी ली। आस्था का मजाक उड़ाने वाले सभी लोगों को ये समझ तो आ ही गया होगा कि भारत की हर समस्या का समाधान केवल और केवल आस्था ही है। आस्था ही हमें एक साथ मिलकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे सकती है। इतिहास बताता है कि जब भी सनातन के मानने वाले आस्थावान लोग एक साथ आएंगे तब समाज देश व विश्व कल्याण की ही बात निकलेगी। जो इस महाकुंभ में भी निकली। सभी सन्तों ने समाज के लिये, देश के विकास के लिए, पर्यावरण के लिए तथा विश्व शांति के लिए सन्देश दिया है। आस्था के इस सैलाब में आने के लिए लोगों ने बड़े कष्ट झेलने के बाद भी कंही दुष्प्रचार नहीं किया। ये सब आस्था में ही सम्भव है।

–ललित शंकर, गाजियाबाद

ISSN No. 2581-3528

महिला सशक्तीकरण आजादी और जिम्मेदारी का संतुलन

संजू चौधरी
अध्यापिका

महिला सशक्तीकरण का सही अर्थ तब ही सार्थक होगा जब महिलाएं अपनी स्वतंत्रता को सही दिशा में उपयोग करें और समाज में अपनी भूमिका को न सिर्फ अधिकारों बल्कि कर्तव्यों के दृष्टिकोण से भी समझें। आधुनिकता और परंपरा का संतुलन ही सशक्तीकरण की सही परिभाषा है। जब महिलाएं अपने कर्तव्यों और अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए आगे बढ़ेंगी, तभी समाज भी सशक्त होगा और आने वाली पीढ़ी को सही दिशा मिलेगी।

महिला सशक्तीकरण का अर्थ केवल अधिकारों की प्राप्ति नहीं, बल्कि कर्तव्यों की पूर्ति भी है। सशक्त महिला वही होती है जो अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखे। भारतीय संस्कृति में नारी को देवी के रूप में सम्मानित किया गया है– वह दुर्गा की तरह शक्तिशाली, सरस्वती की तरह ज्ञानवान और लक्ष्मी की तरह समृद्धि देने वाली होती है परंतु आज के विकसित होते आधुनिक समाज में नारी की सोच और प्राथमिकताएं तेजी से बदल रही हैं।

आज की महिलाएं पढ़–लिखकर आत्मनिर्भर बन रही हैं, अपने करियर को आगे बढ़ा रही हैं और समाज में अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं। यह बदलाव निस्संदेह सराहनीय है, लेकिन इसके साथ ही एक नई प्रवृत्ति भी देखने को मिल रही है– महिलाएँ अपनी स्वतंत्रता को अपनी जिम्मेदारियों अर्थात् उत्तरदायित्वों से ऊपर रखने लगी हैं। पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों को पुरानी सोच मानकर कई बार नकारा जा रहा है, जिससे संतुलन बिगड़ने का खतरा बढ़ रहा है।

भारतीय इतिहास में नारी की भूमिका : अगर भारत के इतिहास पर दृष्टि डालें, तो भारतीय नारियों ने हमेशा अपनी शक्ति, धैर्य, त्याग, समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने मातृत्व और देशभक्ति दोनों का दायित्व निभाते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध वीरता से युद्ध किया। सावित्रीबाई फुले ने समाज में महिलाओं को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया और अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। माता अहिल्याबाई होलकर ने एक कुशल प्रशासिका और वीर योद्धा के रूप में अपने राज्य का कुशल प्रबंधन किया। आधुनिक भारत की नारी भी अपने पारिवारिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए शिक्षा, वैज्ञानिक शोध, प्रबंधन, खेल, सैन्य सेवा, चिकित्सा, बैंकिंग सहित सभी क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देकर आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में आज की नारियों का योगदान अनुपम है।

नई पीढ़ी की बालिकाएं और युवतियां इन महान व्यक्तित्वों से सीख ले सकती हैं कि सफलता का अर्थ केवल अधिकार प्राप्त करना नहीं है, बल्कि कर्तव्यों का भी समुचित निर्वहन

करना है।

महिलाओं की आजादी बनाम नैतिक मूल्यों की अनदेखी : स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि हम अपने पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों को पूरी तरह से छोड़ दें। आधुनिकता और पारंपरिकता का सही तालमेल बनाए रखना ही असली सशक्तीकरण है।

आज के समय में पहनावे को लेकर भी कई तरह की बहस होती है। यह सही है कि महिला का सम्मान उसके कपड़ों से तय नहीं होता, लेकिन यह भी सच है कि हर समाज की अपनी एक सांस्कृतिक पहचान होती है। भारतीय परंपरा में नारी के वस्त्र सदैव गरिमा और मर्यादा के प्रतीक रहे हैं। आधुनिकता की दौड़ में यदि हम अपनी संस्कृति और मूल्यों से पूरी तरह कट जाएंगे, तो यह एक असंतुलित समाज को जन्म देगा।

ग्रामीण और शहरी महिलाओं की तुलना : महिला सशक्तीकरण का प्रभाव शहरों और गाँवों में अलग-अलग रूपों में देखा जा सकता है। शहरी क्षेत्रों में महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं, बड़े-बड़े पदों पर कार्यरत हैं और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रहीं हैं। दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं आज भी कई तरह की सामाजिक बाधाओं का सामना कर रहीं हैं।

हालांकि, गाँवों में भी बदलाव की लहर देखने को मिल रही है। कई ग्रामीण महिलाएं आजीविका मिशनों, स्वरोजगार योजनाओं और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं। लेकिन यहाँ भी संतुलन बनाए रखने की जरूरत है- केवल आर्थिक स्वतंत्रता ही सशक्तीकरण नहीं है, बल्कि समाज और परिवार में नारी की भूमिका का सुदृढ़ होना तथा अपेक्षित कर्तव्यों का भी पालन आवश्यक है।

प्रेरणादायक उदाहरण : हमारे समाज में कई ऐसी महिलाएं हैं जो न केवल अपने क्षेत्र में सफलता के शिखर पर पहुँची हैं, बल्कि अपने पारिवारिक कर्तव्यों को भी पूरी निष्ठा से निभा रही हैं। ऐसी कुछ महिलाएं हैं –

1. **सुधा मूर्ति** – इंफोसिस फाउंडेशन की अध्यक्ष सुधा मूर्ति ने न केवल तकनीकी और सामाजिक क्षेत्र में योगदान दिया, बल्कि एक आदर्श पत्नी, माँ और समाजसेवी के रूप में भी अपनी भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी सादगी और भारतीय मूल्यों को कभी नहीं छोड़ा।

2. **मैरी कॉम :** विश्व चैंपियन बॉक्सर मैरी कॉम ने एक सफल खिलाड़ी होने के साथ-साथ अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी बखूबी निभाया। पाँच बच्चों की माँ होने के बावजूद उन्होंने अपने खेल और परिवार दोनों के बीच संतुलन बनाए रखा।

3. **पी.वी. सिंधु** – ओलंपिक पदक विजेता बैडमिंटन खिलाड़ी पी.वी. सिंधु ने अपने परिवार के समर्थन से खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भारतीय संस्कृति का सम्मान किया।

4. **नित्या मेनन (एयर इंडिया की पायलट)** – जब एयर इंडिया की फ्लाइट ने दुनिया का सबसे लंबा सीधा रूट तय किया था, तब उसमें कैप्टन नित्या मेनन जैसी महिला पायलट भी थीं। वे अपने प्रोफेशन में जितनी निपुण हैं, उतना ही अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति समर्पित भी हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिला सशक्तीकरण: दुनिया भर में महिलाएं अपनी आजादी और कर्तव्यों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रही हैं। उदाहरण के लिए, न्यूज़ीलैंड की पूर्व प्रधानमंत्री जैसिंडा आर्डर्न ने सत्ता में रहते हुए भी अपने मातृत्व को महत्व दिया और दिखाया कि एक महिला अपने परिवार और करियर दोनों को संतुलित कर सकती है।

इवांका ट्रंप, जो एक सफल व्यवसायी और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बेटी हैं, उन्होंने भी पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन को संतुलित रखने का शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आधुनिक जीवनशैली और महिलाओं की प्राथमिकताएं : आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में महिलाओं की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। करियर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व देने के कारण परिवार और समाज के प्रति जिम्मेदारी का भाव थोड़ा कमजोर हो रहा है। सशक्तीकरण का अर्थ अपने अधिकारों को प्राप्त करना तो है, लेकिन यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि परिवार, समाज और राष्ट्र भी हमारी जिम्मेदारी है।

निष्कर्ष : महिला सशक्तीकरण का सही अर्थ तब ही सार्थक होगा जब महिलाएं अपनी स्वतंत्रता को सही दिशा में उपयोग करें और समाज में अपनी भूमिका को न सिर्फ अधिकारों बल्कि कर्तव्यों के दृष्टिकोण से भी समझें। आधुनिकता और परंपरा का संतुलन ही सशक्तीकरण की सही परिभाषा है।

जब महिलाएं अपने कर्तव्यों और अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए आगे बढ़ेंगी, तभी समाज भी सशक्त होगा और आने वाली पीढ़ी को सही दिशा मिलेगी। हमें यह समझना होगा कि एक सशक्त महिला वह नहीं जो केवल अपने अधिकारों की माँग करे, बल्कि वह है जो अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी पूरी निष्ठा से निभाए। तभी हम एक सशक्त और संतुलित समाज की ओर बढ़ सकते हैं।

■

स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि हम अपने पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों को पूरी तरह से छोड़ दें। आधुनिकता और पारंपरिकता का सही तालमेल बनाए रखना ही असली सशक्तीकरण है।

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ - अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा 2025 जनसेवा विद्या केंद्र, चन्नेनहल्लि, बेंगलुरु (21-23 मार्च, 2025)

बांग्लादेश के हिन्दू समाज के साथ एकजुटता से खड़े रहने का आह्वान

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, बांग्लादेश में हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों पर इस्लामी कट्टरपंथी तत्वों द्वारा लगातार हो रही सुनियोजित हिंसा, अन्याय और उत्पीड़न पर गहरी चिंता व्यक्त करती है। यह स्पष्ट रूप से मानवाधिकार हनन का गम्भीर विषय है।

बांग्लादेश में वर्तमान सत्ता पलट के समय मठ-मंदिरों, दुर्गा पूजा पंडालों और शिक्षण संस्थानों पर आक्रमण, मूर्तियों का अनादर, नृशंस हत्याएँ, संपत्ति की लूट, महिलाओं के अपहरण और अत्याचार, बलात् मतांतरण जैसी अनेक घटनाएँ लगातार सामने आ रही हैं। इन घटनाओं को केवल राजनीतिक बताकर इनके मजहबी पक्ष को नकारना सत्य से मुंह मोड़ने जैसा होगा, क्योंकि अधिकतर पीड़ित, हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों से ही हैं।

बांग्लादेश में हिंदू समाज, विशेष रूप से अनुसूचित जाति तथा जनजाति समाज का इस्लामी कट्टरपंथी तत्वों द्वारा उत्पीड़न कोई नई बात नहीं है। बांग्लादेश में हिन्दुओं की निरंतर घटती जनसंख्या (1951 में 22 प्रतिशत से वर्तमान में 7.95 प्रतिशत) दर्शाती है कि उनके सामने अस्तित्व का संकट है। विशेषकर, पिछले वर्ष की हिंसा और घृणा को जिस तरह सरकारी और संस्थागत समर्थन मिला, वह गंभीर चिंता का विषय है। साथ ही, बांग्लादेश से लगातार हो रहे भारत-विरोधी वक्तव्य दोनों देशों के सम्बन्धों को गहरी हानि पहुँचा सकते हैं।

कुछ अंतरराष्ट्रीय शक्तियाँ जानबूझकर भारत के पड़ोसी क्षेत्रों में अविश्वास और टकराव का वातावरण बनाते हुए एक देश को दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर अस्थिरता फैलाने का प्रयास कर रही हैं। प्रतिनिधि सभा, चिंतनशील वर्गों और अंतरराष्ट्रीय मामलों से जुड़े विशेषज्ञों से अनुरोध करती है कि वे भारत विरोधी वातावरण, पाकिस्तान तथा 'डीप स्टेट' की सक्रियता पर दृष्टि रखें और इन्हें उजागर करें। प्रतिनिधि सभा इस तथ्य को रेखांकित करना चाहती है कि इस सारे क्षेत्र की एक साँझी संस्कृति, इतिहास एवं सामाजिक संबंध हैं जिसके चलते एक जगह हुई कोई भी उथल-पुथल सारे क्षेत्र में अपना प्रभाव उत्पन्न करती है। प्रतिनिधि सभा का मानना है कि सभी जागरूक लोग भारत और पड़ोसी देशों की इस साँझी विरासत को दृढ़ता देने की दिशा में प्रयास करें।

यह उल्लेखनीय है कि बांग्लादेश के हिन्दू समाज ने इन अत्याचारों का शांतिपूर्ण, संगठित और लोकतांत्रिक पद्धति से साहसपूर्वक विरोध किया है। यह भी प्रशंसनीय है कि भारत और विश्वभर के हिंदू समाज ने उन्हें नैतिक और भावनात्मक समर्थन दिया है। भारत सहित शेष विश्व के अनेक हिंदू संगठनों ने इस हिंसा के विरुद्ध आंदोलन एवं प्रदर्शन किए हैं और बांग्लादेशी हिंदुओं की सुरक्षा व सम्मान की माँग की है। इसके साथ ही विश्व भर के अनेक नेताओं ने भी इस विषय को अपने स्तर पर उठाया है।

भारत सरकार ने बांग्लादेश के हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ खड़े रहने और उनकी सुरक्षा की आवश्यकता को लेकर अपनी प्रतिबद्धता जताई है। उसने यह विषय बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के साथ-साथ कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी उठाया है। प्रतिनिधि सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि वह बांग्लादेश के हिंदू समाज की सुरक्षा, गरिमा और सहज स्थिति सुनिश्चित करने के लिए वहाँ की सरकार से निरंतर संवाद बनाए रखने के साथ साथ हर सम्भव प्रयास जारी रखे।

प्रतिनिधि सभा का मत है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों व वैश्विक समुदाय को बांग्लादेश में हिन्दू तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार का गंभीरता से संज्ञान लेना चाहिए और बांग्लादेश सरकार पर इन हिंसक गतिविधियों को रोकने का दबाव बनाना चाहिए। प्रतिनिधि सभा हिन्दू समुदाय एवं अन्यान्य देशों के नेताओं से तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से आह्वान करती है कि वे बांग्लादेशी हिंदू तथा अन्य अल्पसंख्यक समाज के समर्थन में एकजुट होकर अपनी आवाज उठाएँ। ■

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : समाजाभिमुख कार्य

तेलंगाना - इंदूर नगर के श्री नीलकंठेश्वर उद्योगी शाखा ने शाखा के भौगोलिक परिसर में स्थित एक घुमन्तु समाज और वनवासी निवास करने वाली बस्ती को चयनित किया। व्यापक सर्वेक्षण किया गया और उनकी जरूरतों, समस्याओं को पहचाना गया। मुख्य रूप से ईसाईकरण तेजी से हो रहा था। बस्ती का विकास हो इसलिए अनेक समाजोपयोगी कार्य आरम्भ हुए। सीवेज सिस्टम को ठीक किया गया। मानसून के दौरान वैकल्पिक आवास, भोजन की व्यवस्था की गई। घरों में बिजली की आपूर्ति के लिए प्रयास किये गए। सम्मक्का सरलम्मा (यहाँ की स्थानीय वन देवता) के मंदिर, जो उनके आदर्श हैं, का निर्माण किया गया। इस प्रयास से उनमें हिंदू धर्म की प्रति निष्ठा बढ़ी है और घर-घर हनुमान चालीसा कार्यक्रम का आयोजन उस बस्ती में किया गया।

बस्ती में महाराजा रामुलु के साथ घर-घर धर्म ज्योति नामक कार्यक्रम में महाराज स्वयं सभी घरों में गए और हर घर में धर्म ज्योति जलाई और उन्हें भगवान की पूजा छवि और केसर से आशीर्वाद दिया। बच्चों को स्कूल भेजना प्रारम्भ हुआ । अब 90 प्रतिशत बच्चे स्कूल जा रहे हैं। शाखा वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में एक परिवार के रूप में बस्ती निवासियों ने भाग लिया ।

आंध्र प्रदेश - विशाखा विभाग, अनकापल्ली जिला के गोंडुपालेम व्यवसायी तरुण शाखा ने गाँव का श्मशान सब के लिए खुला होना चाहिए इसलिए सभी जातियों के नेता गण को एकत्रित कर अनेक बार चर्चा कर आम सहमती बनाई। सब ने मिलकर पैसा इकट्ठा करके श्मसान में शिव भगवान की एक मूर्ती स्थापित की एवं सरहद दीवार बनाई। गाँव में समरस भाव का जागरण भी हुआ। इसी प्रकार गाँव में सर्वेक्षण करके 157 जरूरत मंद लोगों की मेडिकल जांच करवाई। 78 लोगों की मोती बिंदु शल्यक्रिया करवाई। मजदूर लोगों के बच्चों को स्वयंसेवकों ने पढाना प्रारंभ किया। अब उनमें से कई बच्चे पाठशालाओं में जा रहे हैं।

मालवा - अलीराजपुर जिले के कट्ठिवाड़ा खंड में आमखुट ग्राम की बिरसा मुंडा शाखा के द्वारा मंडार गांव में अतिप्राचीन, पहाड़ के ऊपर पत्थर की गुफा में बना गोतर माता (गोद भराई) मंदिर के पुनर्जागरण का कार्य किया। इस जनजाति ग्राम में कुल 200 परिवार है। शिक्षा व अन्य सुविधाओं के अभाव में स्थानान्तरण होता है। स्वतंत्रता से पूर्व से बने चर्च से ईसाई मिशनरी दवा, शिक्षा, आदि की आड़ में धर्मांतरण कर रहे थे। शाखा द्वारा ग्राम समिति बनाकर धार्मिक आयोजन व मासिक गतिविधि आरम्भ हुई। स्वयंसेवकों ने श्रमदान, स्वच्छता अभियान एवं दीवार लेखन का कार्य किया। अब गांव के सभी लोगों में गोतरा माता रानी के प्रति सद्भावना एवं आस्था, विश्वास जागा है व घर वापसी का मार्ग खुला है।

मध्य भारत - विदिशा विभाग के सभी 29 खंडो की चिन्हित 56 व्यवसायी शाखाओं ने शाखा क्षेत्र का सामाजिक अध्ययन कर चिन्हित समस्या के समाधान हेतु सार्थक प्रयास प्रारम्भकिया है। शाखाओं की जागरण टोली ने समस्या का चयन किया एवं समाज की सज्जन शक्ति एवं विविध संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ समस्या समाधान की योजना बनाई। शाखाओं पर विभाग, ज़िला कार्यकारिणी के कार्यकर्ताओं को पालक इस नाते निश्चित किया गया। शाखाओं द्वारा नशा मुक्ति, सरकारी विद्यालय में बच्चों की कम उपस्थिति, गो-संरक्षण, नर्मदा जी का संरक्षण, सिंगल यूज प्लास्टिक पर कार्य, फलदार वृक्षों की कमी, लव जिहाद, धार्मिक जागृति का अभाव, संस्कार शिक्षण कमी, अस्वच्छता, मोबाइल गेमिंग, हिंदू परिवार पलायन इस तरह से 103 प्रकार की समस्याएं चिन्हित की गयी। समाज के सहयोग से सार्थक परिणाम भी दिखाई देने लगे है। मा. सरकार्यवाह जी के साथ अध्ययन करने वाली शाखा टोली के कार्यकर्ताओं का अनुभव कथन एवं संवाद हुआ। सभी 56 शाखाओं के 652 कार्यकर्ता उपस्थित हुए ।

महाकौशल - छतरपुर विभाग में ग्राम स्तर पर सामाजिक समरसता सर्वेक्षण सम्पन्न हुआ। सभी 270 मण्डल के 2106 ग्राम में 9 बिन्दु के सर्वेक्षण पत्रक के आधार पर कार्यकर्ताओं ने घर घर जाकर सर्वेक्षण कार्य किया। सर्वेक्षण में पाया गया कि 1936 ग्रामों में सभी जाती समाज के बंधुओं को मंदिर में प्रवेश है, 1913 ग्रामों में सभी वर्गों का एक ही श्मशान स्थल पर अंतिम संस्कार होता है एवं 1954 ग्रामों में धर्मशालाओं के उपयोग की अनुमति सभी जाति के बंधुओ के लिए है। ऐसी और भी सकारात्मक बाते ध्यान में आयी।10 प्रतिशत ग्राम में कार्य करने की आवश्यकता है यह भी ध्यान में आया । 1440 ग्राम में 11 सदस्यों की ग्राम समिति बनाई गई है। निश्चित समय पर इनकी बैठक होती है। लगातार 3 वर्षों के इन बिन्दुओं पर कार्य हो रहा है। इसलिए समरसता का प्रतिशत बढ़ा है। सभी 2106 ग्राम मे समिति बनाने का लक्ष्य लिया गया ।

चित्तौड़ - आसींद जिला, गुलाबपुरा नगर श्री राम तरुण व्यवसायी शाखा के जागरण टोली ने वर्ष भर में अनेक उपक्रम किये। इसमें समाजजनों की सहभागिता रही।' **नागरिक कर्तव्य-** विधानसभा और लोकसभा चुनाव के समय 100 प्रतिशत मतदान हो इसलिए छोटी बैठकों का आयोजन किया गया 80 प्रतिशत से ज्यादा मतदान हुआ। **सामाजिक समरसता** - श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व प्रभात फेरी शुरू की गई। एक वर्ष पूर्ण होने पर विशाल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया और तत्पश्चात सामाजिक समरसता भोज का आयोजन था। सभी परिवारों के दो हजार से अधिक लोगों ने साथ में भोजन किया। शरद पूर्णिमा सहित दो बार परिवार मिलन का आयोजन किया जिसमें 100 से अधिक परिवारों का सहभाग रहा। **स्व भाव का जागरण -** बेरवा समाज के बाहुल्य क्षेत्र में हनुमान मंदिर निर्माण में सहयोग किया तथा बस्ती का नाम तिरुपति नगर करने के लिए कार्य में सहयोग किया । माली मोहल्ले में शिव मंदिर निर्माण में भी

कार्यकर्ताओं द्वारा सहयोग किया गया। पर्यावरण वर्षा काल में पानी निकालने में प्रशासन का सहयोग किया। मार्ग पर पानी भर जाने के दौरान पेव्हर और ईटों के द्वारा कृत्रिम रास्ता बनाया गया। संघ स्थान पर 45 पौधे लगाए गए। **सेवा उपक्रम** - इस वर्ष भीषण गर्मी को देखते हुए रेलवे स्टेशन पर प्रतिदिन सुबह यात्रियों को रेल के डिब्बे में ही पेय जल उपलब्ध कराया गया। **गो-सेवा** - नगर केंद्र पर गो-माता के उपचार के लिए श्री माधव गो-उपचार केंद्र संचालित है। सहायता हेतु अभियान चलाया जाता है। **सामाजिक सुरक्षा** - प्रहार महायज्ञ निमित्त घर-घर सशुल्क 320 दंड वितरीत किए गए। **अन्य उपक्रम** - श्री राम बस्ती का संचलन निकाला गया। संख्या 145 रही ।

जयपुर - चूरू जिला के कांधराण व्यवसायी शाखा की जागरण टोली द्वारा गाँव वासियों के सहयोग से अनेक समाज उपयोगी कार्य किये गए है। सड़क के पक्के निर्माण को भी स्वयं तोड़कर मुख्य मार्ग को 40 फीट चौड़ा किया गया। ग्राम की मुख्य दीवारों पर अमृतवचन, रामायण एवं भागवत की चौपाई और श्लोक व भगवान के चित्र स्वयंसेवकों द्वारा बनाये गए। शिव सरोवर की पूर्ण साफ-सफाई करके पेड़ लगाए गए। ग्राम की होली अब एक साथ सामूहिक मनाई जाती है। 5000 फलदार पौधे लगाये गए। पुराना जर्जर विद्यालय भवन के स्थान पर 9 कक्ष का नया भवन निर्माण हुआ। सड़क में दब चुके मंदिर को लगभग एक करोड़ की लागत से पुनर्निर्मित किया गया ।

हरियाणा - पानीपत जिले के आजाद उपनगर की एक शाखा ने अपने क्षेत्र की कूड़ा बीनने वालों की सेवा बस्ती (जोगी बस्ती) में संपर्क, उन घरों में जलपान, वहां के विद्यार्थियों को पढाना, संस्कार केंद्र खोलना, यहाँ आने वाले विद्यार्थियों का आधार कार्ड बनवाना, उनको सरकारी स्कूल में दाखिल करवाना, वहां श्रमिक मिलन शुरू करना प्रारम्भ किया। उस क्षेत्र के सामाजिक अध्ययन से ध्यान आया कि कूड़ा बिनने वाले जब किसी कूड़े के ढेर पर कूड़ा बिनने के लिए जाते थे तो वहां पर कुछ लोग उनसे कूड़ा बिनने के बदले में 100 रुपया लेते थे। अपने कार्यकर्ताओं द्वारा बात करने पर लोगों ने उनसे पैसा लेना बंद कर दिया है। अब उस बस्ती का नाम नालंदा नगर रख दिया है।

मेरठ - देववृन्द जिला के रामपुर नगर की व्यवसायी शाखा के द्वारा घुमंतु जाति (गडरिया लुहारों) की बस्ती में सर्वेक्षण किया। अनेक समस्याएं ध्यान में आयी। समाधान हेतु प्रयास प्रारम्भ हुए। 15 बालक बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश कराया। उन्हें कापी, किताब, गर्म कपड़े जूते मोजे, कम्बल वितरित किए गए। 8 व्यक्तियों का आधार कार्ड बनवाया । महाराणा प्रताप बाल संस्कार केन्द्र प्रारंभ किया है।

ब्रज - वृन्दावन जिला में बरसाना ग्राम के श्रीजी शाखा की जागरण टोली द्वारा शाखा क्षेत्र का अध्ययन किया गया। एक समस्या थी कि परिक्रमा मार्ग संकरा था। पहाड़ के रास्ते में श्रद्धालुओं को परिक्रमा में कठिनाई होती थी। 40 स्वयंसेवकों ने समाज की सज्जनशक्ति के 150 बंधुओं को साथ लेकर 12 दिन तक श्रम दान किया। परिक्रमा मार्ग को 4 फीट चौडा करवा कर यात्रा को सुगम बनाया ।

काशी - काशी मध्यभाग के लाजपतनगर की विवेकानंद शाखा क्षेत्र में नशे की लत के कारण घरेलू हिंसा की शिकार कुछ महिलाओं द्वारा शाखा में सहायता के लिए संपर्क किया गया। सर्वेक्षण करने पर लगभग 20 परिवार नशे एवं घरेलु हिंसा में लिप्त पाए गए । स्वयंसेवकों द्वारा नशामुक्ति अभियान चलाया गया। काउंसलिंग कर नशा न करने हेतु समझाया गया। परिणामस्वरूप 5 परिवारों में नशा एवं घरेलू हिंसा दोनों से मुक्ती मिली। शाखा क्षेत्र में 10 वर्ष पूर्व तक एक भी पेड़ नहीं था। स्वयंसेवकों द्वारा समाज का सहयोग लेकर वृक्षारोपण तथा उनकी देखभाल की योजना बनी। पूरा क्षेत्र हरा भरा हो गया है एवं चिडियों की चहचहाहट भी सुनाई देने लगी है।

दक्षिण बिहार - पटना के राजेंद्रनगर तरुण व्यवसायी शाखा द्वारा सामाजिक अध्ययन करने पर ध्यान में आया कि सेवा बस्ती में अलग अलग एन.जी.ओ. कार्यरत है। जिनके द्वारा हिन्दू विरोधी वातावरण बनाने का कार्य होता था और धर्मांतरण भी हो रहा था। शाखा के स्वयंसेवकों ने बाल संस्कार केंद्र प्रारम्भ किया। हनुमान चालीसा, सरस्वती वन्दना इत्यादी का पठन होने लगा और धीरे धीरे बस्ती का वातावरण बदलने लगा। बस्ती में हर 15 दिन पर स्वास्थ्य शिविर लगाने से अनेक लोगों को बीमारियों से राहत मिली। सिलाई केंद्र के कारण महिलाओं को रोजगार प्राप्त हुआ। पर्व त्योहार एकत्रित मनाने से समरसता का भाव भी जगा है।

मध्य बंग - विष्णुपुर खंड के बाकादह मंडल के कामारपारा गांव के आश्रम पारा व्यवसायिक शाखा के द्वारा एक संपूर्ण वनवासी गांव का सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन संभव हुआ है। सर्वेक्षण में महिला पुरुषों में व्यसनाधीनता, कम उम्र में ही शादी कर देना, बच्चों को स्कूल न भेजना जैसी बातें ध्यान में आयी। शाखा ने एक शिशु संस्कार केंद्र प्रारंभ किया। बच्चों को विद्यालय में भेजने के लिए प्रयास किये गए। महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण भी दिया गया। पुरुषों को भी साल पत्ता बनाने का मशीन दिया गया। अभी गाँव में पाठ दान केंद्र चलाए जा रहे है। 150 विद्यार्थी 6 गांव से रोज आते हैं। आस-पास के 18 गाँव में सेवा भारती एवं ग्राम विकास के द्वारा शिशु संस्कार केंद्र चलाए जा रहा है। अब बाल विवाह बंद हुए हैं।

वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य - बीते वर्ष के अपने कार्यों के सिंहावलोकन के पश्चात् वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य की एक संक्षिप्त समीक्षा करेंगे। विगत वर्ष में अपने राष्ट्रीय जीवन में उत्साहवर्धक एवं दुःखद या अप्रिय घटनाओं का सम्मिश्रण रहा है।

समूचे राष्ट्र के लिए विशेषतः हिन्दू समाज के लिए गौरव बढ़ाने वाला आत्मविश्वास जगानेवाला प्रयागराज का महाकुंभ अविस्मरणीय रहा। इस विशेष महाकुंभ ने भारत की आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक विरासत के अद्‌भुत दर्शन के साथ साथ अपने समाज के आंतरिक सत्त्व का भी अहसास कराया। कुंभ मेला के पावन कालावधि में करोड़ों श्रद्धालुओं ने संगम में पवित्र स्नान कर 'न भूतो..' इस प्रकार के एक इतिहास का निर्माण किया। राष्ट्र के प्रत्येक पंथ संप्रदाय के साधु-महात्मा एवं भक्तजन इस आध्यात्मिक महा मेले में श्रद्धा भक्ति से भाग

लिए। इस विशाल कुंभ की समीचीन एवं सुचारु व्यवस्था का निर्माण तथा संचालन करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य सरकार एवं भारत के केन्द्र सरकार समूचे राष्ट्र के अभिनंदन के पात्र हैं। समाज के असंख्य व्यक्ति और संस्थाओं ने भी अपने संसाधन एवं परिश्रम लगा कर व्यवस्था में अपार सहयोग देने के लिए सामने आये जो अभिनंदनीय है।

मौनी अमावस्या के प्रमुख स्नान के दिन हुए दुर्भाग्यपूर्ण भगदड़ में श्रद्धालुओं की मृत्यु की दुर्घटना इस कुंभ का एक अत्यंत दुःखद पृष्ट रहा। अन्यथा शेष सारा कुंभ व्यवस्था, अनुशासन, स्वच्छता, सेवा और सहयोग की दृष्टि से सार्वजनिक जीवन और विशेष पर्वों के आयोजन के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ है, एक कीर्तिमान बन गया है।

कुंभ के अवसर में संघ-प्रेरित अनेक संस्था-संगठनों ने भी वहाँ सेवा, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, वैचारिक जैसे विविध प्रकार के आयोजन किए थे। उन में से अपने कार्यकर्ताओं के द्वारा किये गये दो विशेष प्रयासों का उल्लेख करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।

1) **नेत्र कुंभ -** सक्षम संगठन ने पिछली बार जैसे इस बार भी कुंभ में आनेवाले लोगों की निःशुल्क नेत्र परीक्षा, चश्मा वितरण और, आवश्यकता पड़ने पर शल्य क्रिया की व्यवस्था की थी इस कार्य में अनेक सेवा भावी स्वास्थ्य संस्थाओं व अन्य सामाजिक संस्थाओं ने पूर्ण सहयोग दिया। सर्व सुसज्जित विशाल पंडाल में आयोजित इस प्रकल्प की कुछ संख्यात्मक जानकारी।

नेत्र जाँच के कुल लाभार्थी 2,37,964 निशुल्क चश्मा वितरण 1,63,652 मोतियाबिंद ऑपरेशन 17,069, कुल 53 दिन चले इस सेवा कार्य के लिए 300 से अधिक नेत्र चिकित्सक और 2800 कार्यकर्ताओं ने कार्य किया।

2) **एक थाली-एक थैला अभियान-** पर्यावरण गतिविधि की योजना और समाज के अनेक संगठन संस्थाओं के सहभागिता से आयोजित एक थाली एक थैला अभियान अत्यंत सफल रहा कुंभ में थर्मोकोल थाली या पॉलीथिन थैले का उपयोग नहीं करने के संकल्प को साकार करने के उद्देश्य से चले इस अभियान के द्वारा देश भर में स्टील थालियाँ और कपड़े की थैलियों का व्यापक संग्रह किया गया। इसमें कुल 2241 संस्था-संगठनों ने 7258 केंद्रों से कुल 14,17,064 थालियाँ तथा 13,46,128 थैले का संग्रह किया। जिनको कुंभ में विविध पंडालों में वितरित किया गया। यह अभियान अपने आप में एक अनोखा प्रयोग था इस कारण पर्यावरण जागृति लाने में और स्वच्छ कुंभ की कल्पना को जन जन तक पहुँचाने में उत्साहवर्धक सफलता मिली।

इस वर्ष हुई लोकसभा तथा चार राज्यों की विधान सभा चुनाव के पूर्व स्वयंसेवकों ने लोकमत परिष्कार के व्यापक प्रयास करते हुए राष्ट्र हित के मुद्दों को समाज में चर्चा में लाये और अधिकाधिक प्रमाण में मतदान होने के लिए प्रयत्न किया यह उपक्रम स्वस्थ लोकतंत्र की सुदृढ़ता को दर्शाते हुए जनता को अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को निभाने में उपयुक्त सिद्ध हुआ।

आदर्श प्रशासन, धार्मिक श्रद्धा, प्रजा के प्रति मातृत्व, निष्कलंक चरित्र्य जैसे गुणों की प्रतिमूर्ति स्वनामधन्य लोकमाता अहिल्या देवी होलकर के जन्म की त्रिशताब्दी पर संघ की ओर से वक्तव्य दिया गया था उसके प्रकाश में देश के अनेक स्थानों पर प्रभावी कार्यक्रम संपन्न हुए। कई सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं ने विविध प्रकार के आयोजन द्वारा लोकमाता के प्रेरक व्यक्तित्व को समाज के सम्मुख लाने का सफल प्रयास किए अपने इतिहास के एक प्रखर व्यक्तित्व के स्मरण से समाज में प्रेरणा एवं कर्तव्य की जागृति हुई।

ऐसे विविध प्रेरणादायी और उत्साहजनक गतिविधियों के कारण समाज में राष्ट्र भाव, सामाजिक संवेदना, विकास के विभिन्न प्रयास के सकारात्मक परिवेश उत्तरोत्तर निर्माण हो रहा है किंतु साथ ही साथ कुछ गंभीर समस्या एवं चुनौतियों को भी अपने समाज को सामना करना पड़ रहा है।

अपने पड़ोसी बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के राजनैतिक आंदोलन के दौरान मज़हबी कट्टरपंथियों द्वारा वहाँ के हिन्दू समाज एवं अन्य अल्पसंख्यकों पर हुए बर्बरतापूर्ण आक्रमण घोर निंदनीय है मानवता, लोकतंत्र जैसे सभ्य समाज के किसी भी मापदंड से वहाँ की घटनाएँ शर्मनाक रही हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक और अन्य कई संगठनों के संयुक्त प्रयास से देश भर में अनेक स्थानों पर बांग्लादेश की स्थिति के कारणीभूत उन्माद शक्तियों का खंडन करने के कार्यक्रम हुए। भारत की सरकार ने भी हिंदुओं की रक्षा के लिए बांग्लादेश सरकार से आग्रह किया और इस दिशा में वैश्विक अभिमत बनाने का प्रयास किया।

वहाँ की स्थिति अभी भी गंभीर है। हिन्दुओं के जानमाल की रक्षा संकट में हैं, किंतु उल्लेखनीय विषय है कि इस विकट और भीषण परिस्थिति में भी बांग्लादेश का हिन्दू समाज आत्म धैर्य से स्वयं के बलबूते पर आक्रमणकारी शक्तियों के सामने डट कर खड़ा हैं और अपनी रक्षा करने के लिए संघर्षरत हैं, जो अत्यंत सराहनीय है।

भारत का समाज वहाँ के अपने हिन्दुओं की सुरक्षा एवं सुखी जीवन की ना केवल कामना करता है बल्कि उसके लिए हर संभव समर्थन व सहयोग देने का प्रयास करेगा। हमारा मत है कि जागतिक समुदाय को भी बांग्लादेश के हिंदू व अन्य अल्पसंख्यक समुदाय के मानवाधिकार की रक्षा हेतु सामने आना चाहिए।

अपने देश की पूर्व सीमावर्ती राज्य मणिपुर में विगत 20 महीनों से परिस्थिति अशांत रही है। वहाँ के दो समुदायों के बीच व्यापक प्रमाण में हुई हिंसा के वारदातों के कारण परस्पर अविश्वास व वैमनस्य उत्पन्न हो गया है। जनता को प्रतिदिन की ज़िंदगी के कई मामलों में अनेक प्रकार के कष्ट भुगतने पड़े है। पिछले दिनों केंद्र सरकार ने राजनैतिक और प्रशासनिक स्तर पर लिये कुछ निर्णयों के कारण परिस्थिति के सुधार की दिशा में कुछ आशा जगी है किंतु सौहार्दपूर्ण सहज विश्वास का माहौल आने में समय लगेगा।

इस पूरी अवधी में संघ व संघ प्रेरित सामाजिक संगठनों ने एक ओर हिंसक घटनाओं से प्रभावित लोगों की राहत के लिए कार्य किया; वहीं दूसरी ओर विविध समुदायों से निरंतर संपर्क रखा। ■

ISSN No. 2581-3528

राष्ट्र भक्ति की अमर ज्वाला

हे भारत! तेरी धरती चंदन, गगन तेरा है गंगा जल,
तेरी माटी की महक निराली, सजीव करे हर पथिक का पल।
हिमगिरि तेरा मस्तक ऊँचा, गूंजे जहाँ जयघोष सदा,
तेरी संतानें वीर दुर्गा, अर्जुन, शिवा, सुभाष कदा।
तूने हमको ज्ञान दिया है, शौर्य दिया, बलिदान दिया,
तेरे चरणों में शीश झुका कर, हमने हर वरदान लिया।
हम वचनबद्ध हैं भारत को, फिर से स्वर्णिम बनाएंगे,
प्रेम, पराक्रम और परिश्रम से, इसकी शान बढ़ाएंगे।

खड़ग उठाकर, धर्म बचाने, जब–जब रण में वीर गए,
शेर शिवा, भगत–सुभाष, मातृभूमि पर शीश धरे।
शान तेरी, आन तेरी, तुम ने हमें अभिमान दिया
तेरी रक्षा की सौगंध, भारतवासीयों ने यह वरदान लिया।
संस्कारों की धरती मेरी, संस्कृति का यह अभिमान,
हर धर्म यहाँ पर पनप रहा, हर भाषा का मान–सम्मान।
हम वचनबद्ध हैं भारत को, फिर से स्वर्णिम बनाएंगे,
प्रेम, पराक्रम और परिश्रम से, इसकी शान बढ़ाएंगे।

गंगा के तट पर संत विराजें, शंखनाद की गूँज उठे,
हरिद्वार, प्रयाग, काशी में, अमृतमयी धाराएँ बहें।
महाकुंभ का पर्व अनूठा, धर्म–अध्यात्म का दिव्य सवेरा,
जहाँ अमृत की बूँदें बरसीं, भारत का वह पुण्य बसेरा।
ऋषि–मुनियों की तपोभूमि, सनातन का अभिमान यही,
संस्कृति की यह नींव अमर है, भारत की पहचान यही।
हम वचनबद्ध हैं भारत को, फिर से स्वर्णिम बनाएंगे,
प्रेम, पराक्रम और परिश्रम से, इसकी शान बढ़ाएंगे।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक, पर्वत, नदियाँ, खेत खलिहान,
अनेक रंग, अनेक बोलियाँ, फिर भी एक हिंदुस्तान।
संस्कृति में गीता बसी है, वेदों की वाणी पावन है,
योग, आयुर्वेद का दर्शन, समस्त जगत का साधन है।
नारी का सम्मान सिखाया, पुरुषार्थ की राह बताई,
दया, करुणा, प्रेम, शांति की गाथाएँ भारत ने गाई।
हम वचनबद्ध हैं भारत को, फिर से स्वर्णिम बनाएंगे,
प्रेम, पराक्रम और परिश्रम से, इसकी शान बढ़ाएंगे।

हम तेरी संतान सदा हैं, तेरा मान बढ़ाएँगे,
तेरी रक्षा, तेरी सेवा, अपना धर्म निभाएँगे।
अगर समय ने दी चुनौती, रणभूमि में आएंगे,
कण–कण में दीप जलाकर, नव इतिहास बनाएंगे।
तेरा गौरव, तेरा वैभव, अक्षय रहे संसार में,
तेरी जय–जयकार हो हर दम, सूरज, चाँद, में।
हम वचनबद्ध हैं भारत को, फिर से स्वर्णिम बनाएंगे,
प्रेम, पराक्रम और परिश्रम से, इसकी शान बढ़ाएंगे।

डॉ.वेद प्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर
के. डी. कॉलेज, सिम्भावली

ISSN No. 2581-3528

नैरेटिव को न्योता देती पुस्तक

सुभाष चन्द्र सिंह
पूर्व राज्य सूचना आयुक्त, लखनऊ (उ.प्र.)

विमर्श भारत का' पुस्तक देश में दशकों से चल रहे समाज से कटे वामपंथी और फर्जी सेक्युलर विमर्श पर कड़ा प्रहार करती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने 10 मार्च को नोएडा में टीवी चैनल न्यूज 24 की प्रधान संपादक श्रीमती अनुराधा प्रसाद की विशिष्ट उपस्थिति में विमोचन किया।

पुस्तक मुख्य रूप से प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा के तत्वावधान में आयोजित चार विमर्शों की श्रृंखला में आए विचारों का संकलन है। ये विमर्श 2020, 21, 22 और 23 में नोएडा और ग्रेटर नोएडा में आयोजित किए गए थे। विमर्श के क्रम में राष्ट्रीय स्तर नामचीन बुद्धिजीवियों, पत्रकारों, सिने कलाकारों, सामाजिक हस्तियों और राष्ट्रवादी सोच से प्रेरित लोगों ने विचार व्यक्त किए। इसमें देशभर से जुटे नवोदित पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता, बौद्धिक और सेवा क्षेत्र से जुड़े लोगों ने हिस्सेदारी की और राष्ट्रवादी विचारों से लाभान्वित हुए।

पुस्तक में सभी चार विमर्शों में आए विचारों को अलग अलग रेखांकित किया गया है। इसका पहला हिस्सा 2020 के विमर्श पर केंद्रित है। विषय था 'विरासत'। इसमें विद्वानों ने भारत की विरासत के आधारभूत तत्वों पर केंद्रित किया। लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह श्री अरुण कुमार के विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख राम लाल जी,संघ के ही वरिष्ठ प्रचारक अशोक बेरी जी, भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री शिव प्रकाश, पूर्व वाइस चांसलर सर्व श्री रजनीश शुक्ल, भगवती प्रकाश शर्मा के अलावा पत्रकारिता जगत के हस्ताक्षर सर्वश्री आलोक मेहता, जगदीश उपासने, हितेश शंकर, सुरेश चव्हाणके आदि के विचार विशेष रूप से पठनीय हैं।

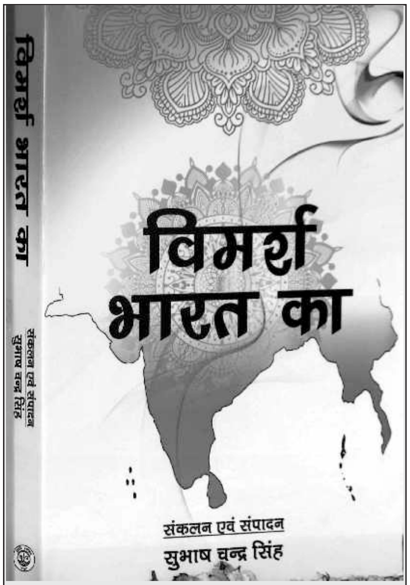

पुस्तक का नाम - विमर्श भारत का
पृष्ठ -225
मूल्य - रुपए 225/
प्रकाशन - सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज झंडेवाला
नई दिल्ली- 110055
फोन - 011 23514672
मो. - 8851358634
Suruchiprakashan@gmail.com
www.suruchiprakashan.com

वर्ष 2021 के विमर्श का विषय था 'भारतोदय, आजादी का अमृत महोत्सव'। इसमें स्वतंत्रता के अंतर्निहित मूल्यों के आलोक में चर्चा हुई। विशेष रूप से राज्यसभा सदस्य श्री राकेश सिन्हा, सच्चिदानंद जोशी और पूर्व कुलपति संजीव शर्मा के अलावा वरिष्ठ पत्रकार विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, हर्ष वर्धन त्रिपाठी के विचारों से पुस्तक को वैचारिक समृद्धि मिली।

विमर्श 2022 में 'भविष्य का भारत' विषयक चर्चा में देश की मूर्धन्य विभूतियों ने हिस्सा लिया। विशेष उल्लेख प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक जे नंद कुमार का करना समीचीन होगा। उन्होंने भारत के स्वत्व-बोध को जीवन के हर क्षेत्र में जरूरी बताया। पूर्व केंद्रीय सूचना आयुक्त और वरिष्ठ पत्रकार उदय माहुरकर, अवधेश कुमार, बृजेश सिंह, प्रोफेसर संजय द्विवेदी और डॉ.प्रमोद सैनी के विचार अवश्य पढ़ना चाहिए।

वर्ष 2023 में विमर्श का विषय रखा गया,'स्व' भारत का आत्मबोध। इसमें भी संघ के वरिष्ठ प्रचारक और प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक जे नंद कुमार जी का मार्गदर्शन मिला। उन्होंने आध्यात्मिकता के विचार-सूत्र को भारत के स्वबोध की आधारशिला बताया। कई सत्रों की चर्चा में निकले विचार-नवनीत का लाभ देशभर के जुटे लोगों को मिला। वरिष्ठ पत्रकार एवं कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता व जनसंचार विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ के पूर्व कुलपति श्री बलदेव भाई शर्मा और माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति केजी सुरेश के अलावा मीडिया के चर्चित नाम नरेंद्र भदौरिया, प्रफुल्ल केतकर, रुबिका लियाकत, अशोक श्रीवास्तव, प्रणय कुमार, हरीश वर्णवाल आदि के उल्लेखनीय विचार पढ़ना चाहिए।

पुस्तक का मुखपृष्ठ अति सुंदर है। विचार प्रवाह का साक्षी है। 225 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य मात्र 225 रुपये है। इसे आप सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झंडेवाला, नई दिल्ली से डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। ■

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी, उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण

ISSN No. 2581-3528

बलिदान दिवस विशेष - 25 मार्च

गणेश शंकर 'विद्यार्थी' का बलिदान

स्वाधीनता सेनानी, क्रांतिकारी, पत्रकार तथा कई नये लेखक व कवियों के निर्माता श्री गणेशशंकर 'विद्यार्थी' का जन्म 26 अक्तूबर, 1890 (आश्विन शुक्ल 14, रविवार, संवत 1947) को प्रयाग (उ.प्र.) के अतरसुइया मौहल्ले में अपने नाना श्री सूरजप्रसाद श्रीवास्तव के घर में हुआ था, जो सहायक जेलर थे। उनके पुरखे हथगांव (जिला फतेहपुर, उ.प्र.) के निवासी थे। जीवनयापन के लिए उनके पिता मुंशी जयनारायण अध्यापन एवं ज्योतिष को अपनाकर अपनी पत्नी गोमती देवी सहित जिला गुना (म.प्र) के गंगवली कस्बे में बस गये।

प्रारम्भिक शिक्षा वहां के एंग्लो वर्नाक्युलर स्कूल से लेकर गणेश ने अपने बड़े भाई के पास कानपुर आकर हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर उन्होंने प्रयाग में इण्टर में प्रवेश लिया। उसी दौरान विवाह होने से उनकी पढ़ाई छूट गयी। अब घर चलाने के लिए धन की आवश्यकता थी, अतः वे फिर कानपुर आ गये। अब तक उन्हें पत्रकारिता का शौक भी लग चुका था।

1908 में उन्हें कानपुर के करेंसी दफ्तर में 30 रु. महीने की नौकरी मिल गयी। एक साल बाद अंग्रेज अधिकारी से झगड़ा होने से उसे छोड़कर वे पृथ्वीनाथ हाई स्कूल में पढ़ाने लगे। यहां भी अधिक समय तक उनका मन नहीं लगा। अतः प्रयाग आकर उन्होंने कर्मयोगी, सरस्वती तथा अभ्युदय पत्रों के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। वे स्वराज्य (उर्दू) तथा हितवार्ता (कोलकाता) में भी लिखते थे। स्वास्थ्य खराब होने से वे फिर कानपुर आ गये और नौ नवम्बर, 1913 से साप्ताहिक पत्र 'प्रताप' प्रारम्भ कर दिया।

'प्रताप' के कार्य में विद्यार्थी जी ने स्वयं को खपा दिया। सरल भाषा में अंग्रेज शासन, सामंतों, जमीदारों तथा देशी राजाओं के विरुद्ध तथ्यात्मक सामग्री होने से उसकी लोकप्रियता बढ़ने लगी। विद्यार्थी जी ने 'प्रभा' नामक मासिक पत्र भी निकला। 23 नवम्बर, 1920 से उन्होंने 'प्रताप' को दैनिक कर दिया। इससे बौखलाकर प्रशासन ने उन्हें झूठे मुकदमों में फंसाकर कई बार जेल भेजा और भारी जुर्माना लगाया। फिर भी वे डरे नहीं। वे लोकमान्य तिलक और फिर गांधी जी के अनुयायी बने। 1925 में वे कानपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन के प्रधानमंत्री तथा 1930 में प्रांतीय कांग्रेस समिति के अध्यक्ष बनाये गये। 1930 के आंदोलन में वे अपने प्रदेश के प्रथम 'डिक्टेटर' नियुक्त किये गये।

'प्रताप' के माध्यम से किसान और मजदूरों की आवाज उठाने के कारण वे कानपुर में मजदूरों के नेता बन गये। वे श्रीमती एनी बेसेंट के 'होमरूल लीग' आंदोलन में भी सक्रिय रहे। क्रान्तिकारियों के समर्थक होने के नाते वे रोटी और गोली से लेकर उनके परिवारों के योगक्षेम की भी चिन्ता करते थे। क्रान्तिवीर भगतसिंह ने भी कुछ समय तक 'प्रताप' में काम किया था। वे 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के गोरखपुर में हुए 19वें अधिवेशन के सभापित चुने गये थे।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ ही उन दिनों पाकिस्तान की मांग भी जोर पकड़ रही थी। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह आदि को फांसी हुई। यह समाचार फैलने पर अगले दिन कानपुर में लोगों ने विरोध जुलूस निकाले। पर न जाने क्यों इससे भड़क कर कुछ मजहबी उन्मादी दंगा करने लगे। सामाजिक सद्भाव के पुजारी विद्यार्थी जी अपने जीवन भर की तपस्या भंग होते देख बौखला गये। वे सीना खोलकर दंगाइयों के आगे कूद पड़े।

दंगाई तो मरने-मारने पर उतारू ही थे। उन्होंने कुल्हाड़ियों से विद्यार्थी जी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। यहां तक की उनकी साबुत लाश भी नहीं मिली। केवल एक बांह मिली, जिस पर 'गजेन्द्र' गुदा था। उसी से वे पहचाने गये। वह 25 मार्च, 1931 का दिन था, जब अन्ध मजहबवाद की बलिवेदी पर भारत मां के सच्चे सपूत गणेशशंकर 'विद्यार्थी' का बलिदान हुआ।

ISSN No. 2581-3528

भारतीय मेधा जिन्होंने विश्व में फहराया परचम

सुनीता विलियम्स

भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स ने अपने अदम्य साहस और संकल्प से पूरे भारत का सीना गर्व से चौड़ा कर दिया है। 5 जून 2024 को 8 दिनों के मिशन पर अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के लिए रवाना हुईं सुनीता तकनीकी समस्याओं के कारण 9 महीने 14 दिन यानी 286 दिनों तक अंतरिक्ष में रहीं। इस दौरान उन्होंने पृथ्वी की 4,576 परिक्रमा की और कुल 121,347,491 मील की दूरी तय की।

अपने मिशन के दौरान, सुनीता ने 62 घंटे से अधिक समय तक स्पेसवॉक किया, जो किसी महिला अंतरिक्ष यात्री द्वारा किया गया सबसे लंबा समय है। उन्होंने अपने साथी बुच विल्मोर के साथ मिलकर 150 से अधिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रयोग किए। इन प्रयोगों में पौधों का अंतरिक्ष में विकास, स्टेम सेल तकनीक का अध्ययन, ऑटोइम्यून बीमारियों, कैंसर और रक्त से जुड़ी बीमारियों पर अनुसंधान शामिल हैं, जो भविष्य में चिकित्सा क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होंगे।

सुनीता और उनकी टीम ने अंतरिक्ष स्टेशन की मरम्मत, उपकरणों के अद्यतन और माइक्रोग्रेविटी तथा फ्यूल सेल रिएक्टर पर भी महत्वपूर्ण प्रयोग किए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुनीता को 'आइकन' मानते हुए उन्हें बधाई दी और कहा कि भारत 2035 तक अपना अंतरिक्ष स्टेशन बनाएगा और 2040 तक भारतीय अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा पर कदम रखेंगे।

सुनीता विलियम्स की यह यात्रा न केवल अंतरिक्ष अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान है, बल्कि यह साहस, धैर्य और संकल्प की मिसाल भी है, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

अकृत जसवाल

जब अधिकांश बच्चे खिलौनों से खेल रहे होते हैं, तब कुछ असाधारण प्रतिभाएं दुनिया को चौंकाने वाले कारनामे कर रही होती हैं। ऐसी ही एक विलक्षण प्रतिभा हैं अकृत जसवाल, जिन्होंने महज 7 साल की उम्र में पहली बार एक सर्जरी कर दुनिया को चौंका दिया था। 23 अप्रैल 1993 को भारत में जन्मे अकृत का IQ 146 मापा गया, जो उस समय उनके आयु वर्ग के बच्चों में सबसे अधिक था। चिकित्सा के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही विकसित हो गई थी, जब उन्होंने अपने गाँव में सर्जनों को ऑपरेशन करते देखा और चिकित्सा तकनीकों को समझना शुरू किया।

सिर्फ 7 साल की उम्र में, अकृत ने एक 8 साल की बच्ची की सर्जरी की, जिसकी उंगलियां जलने के कारण आपस में चिपक गई थीं। उसके माता-पिता महंगी चिकित्सा प्रक्रिया का खर्च उठाने में असमर्थ थे, तब अकृत ने अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग करके उसकी उंगलियां सफलतापूर्वक अलग कर दीं। अकृत की प्रतिभा सिर्फ चिकित्सा तक सीमित नहीं थी। 12 साल की उम्र में वे चंडीगढ़ कॉलेज में विज्ञान की पढ़ाई करने वाले सबसे युवा छात्र बने। उनकी बुद्धिमत्ता और उपलब्धियों के कारण वे 13 साल की उम्र में ओपरा विनफ्रे शो में भी शामिल हुए। 17 साल की उम्र तक वे एप्लाइड केमिस्ट्री में मास्टर डिग्री हासिल करने की राह पर थे और 20 साल की उम्र तक चिकित्सा क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत हो गए।

उनका सपना है कि वे कैंसर के लिए एक सस्ता और प्रभावी इलाज खोज सकें, जिससे हजारों मरीजों को नई जिंदगी मिल सके। अकृत जसवाल की कहानी साबित करती है कि अगर जुनून और कड़ी मेहनत हो, तो कोई भी असंभव कार्य संभव किया जा सकता है।

आर्यन शुक्ला

महाराष्ट्र के 14 वर्षीय आर्यन शुक्ला, जिन्हें 'मानव कैलकुलेटर' कहा जा रहा है, ने हाल ही में दुबई में आयोजित एक मानसिक गणित प्रतियोगिता में अपनी अद्वितीय प्रतिभा से विश्व को चौंका दिया। उन्होंने एक ही दिन में छह गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिए, जिससे उनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया। इस तकनीक को 'फ्लैश अंजान' कहा जाता है, जहां आपको बिजली की गति से स्क्रीन पर चमकती संख्याओं को संसाधित करना होता है। इसका आधार अबेकस है। मैं इसे हासिल करने के लिए पिछले आठ वर्षों से प्रशिक्षण ले रहा हूँ।'

छह विश्व रिकॉर्ड जो बनाए इतिहासः आर्यन शुक्ला ने मानसिक गणित में निम्नलिखित छह विश्व रिकॉर्ड अपने नाम किए-

1.) 100 चार अंकों की संख्याओं को जोड़ने का सबसे तेज समय - 30.9 सेकंड। **2.)** 200 चार अंकों की संख्याओं को जोड़ने का सबसे तेज समय - 1 मिनट 9.68 सेकंड। **3.)** 50 पाँच अंकों की संख्याओं को जोड़ने का सबसे तेज समय - 18.71 सेकंड। **4.)** 20 अंकों की संख्या को 10 अंकों की संख्या (10 का सेट) से विभाजित करने का सबसे तेज़ समय - 5 मिनट 42 सेकंड। **5.)** दो पाँच अंकों की संख्याओं के 10 सेट को गुणा करने का सबसे तेज़ समय - 51.69 सेकंड। **6.)** दो आठ अंकों की संख्याओं के 10 सेट को गुणा करने का सबसे तेज समय - 2 मिनट 35.41 सेकंड। ■

'विमर्श भारत का' पुस्तक विमोचन की झलकियां

9761757840

Dr. Naveen Kumar Gupta

M.B.B.S.,Dip.C.H.(Paediatrics)

Gold Medalist

नवजात, शिशु व बाल रोग विशेषज्ञ

Satyavati Clinic

Brij Chikitsa Sansthan Market,
Daresi Road, Mathura (up)
281001